Hindi (Course B)—2009
Comptt.
(Set I—Delhi)

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश :

*(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं—'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।*

*(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।*

(iii) यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शिक्षित व्यक्ति सिद्धांतवादी होने पर भी विनम्र होता है। जिन गुणों को अंग्रेजी में 'कल्चर' कहते हैं, उन्हें संस्कृत में संस्कृति नहीं, विनय कहने का रिवाज था। विनय का अर्थ 'झुकना' होता है, विनम्रता शिक्षा का परिणाम समझी जाती थी। जो विनयशील है, उसे अनुशासन सिखाने की आवश्यकता नहीं होती। जो विनयशील है, वही अहिंसक भी होता है। सच्ची विनयशीलता अथवा सच्ची अहिंसा केवल कर्म और वाणी तक ही सीमित नहीं रहती, उसका आचरण विचारों के धरातल पर भी किया जाता है।

शिक्षित व्यक्ति के भीतर चिन्तन की शक्ति होती है, सवाल पूछने की योग्यता होती है। सही जवाब वही पा सकता है जो सही सवाल पूछ सकता है। मनुष्य के पास जो अपरिमित ज्ञान का भंडार है, वह सब-का-सब प्रश्नों के उत्तरों से ही उत्पन्न हुआ है। प्रश्न मनुष्य की जिज्ञासा का नाम है।

जिसे हम सोचने की शक्ति कहते हैं, वह असल में चीज़ों पर शंका करने की शक्ति है और सच्ची शिक्षा वह है, जो इस शक्ति को अधिक-से-अधिक जगाकर मनुष्य को चिन्तनशील बनाती है।

परंपरा और विद्रोह, ये दोनों ही जीवन के चिरन्तन सहचर हैं। परंपरा रास्ते में बाँध डालकर पानी को गहरा बनाती है। विद्रोह बाँध को तोड़कर पानी को दूर-दूर तक ले जाता है। परंपरा की रक्षा जितनी आवश्यक है, विद्रोह की आवश्यकता उससे कम नहीं है। विद्रोही आगे बढ़ने के लिए ज़ोर लगाता है। परंपरा उसके पाँवों को जकड़कर उसे रोकना चाहती है। परंपरा और विद्रोह के इस संघर्ष के बाद समाज जितना आगे बढ़ पाता है, वही उसकी वास्तविक प्रगति है। विद्रोह के भाव शंका करने की प्रवृत्ति से जन्म लेते हैं। इस प्रवृत्ति को उकसाना शिक्षा का मुख्य ध्येय है। जिस दिन शंका करने की प्रवृत्ति समाप्त हो जाएगी, उस दिन मानवीय स्वतंत्रता का सर्वनाश हो जाएगा। शिक्षा वही श्रेष्ठ है जो मनुष्य को शंकालु बनाकर उससे ज्ञान की नई-नई दिशाओं का अनुसंधान कराती है।

(i) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(ii) विनयशील व्यक्ति की किन्हीं *दो* विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2

(iii) लेखक ने जिज्ञासा और ज्ञान का क्या सम्बंध माना है? 1

(iv) 'परम्परा' और 'विद्रोह' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 2

(v) परम्परा और विद्रोह के संघर्ष का क्या परिणाम होता है? 1

(vi) शिक्षा का मुख्य ध्येय क्या है? 1

(vii) 'विनय' एवं 'आचरण' शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए। 1

(viii) 'विद्रोह', 'विद्रोही' शब्दों के शब्द-भेद बताइए। 1

(ix) 'अनुशासन' एवं 'शंकालु' शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए। 1

(x) 'बाँध' शब्द का तत्सम तथा 'कर्म' शब्द का तद्भव रूप लिखिए। 1

उत्तर—(i) शीर्षक—**सच्ची शिक्षा/शिक्षा की देन**

(ii) 1. विनयशील व्यक्ति अनुशासित होते हैं।

2. वे अहिंसक भी होते हैं।

(iii) लेखक ने जिज्ञासा और ज्ञान का संबंध अटूट बताया है। प्रश्न पूछना जिज्ञासा की देन तथा उत्तर देना चिंतन द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का परिणाम है।

(iv) परंपरा पानी पर बाँध डालकर उसे गहरा बनाती है। विद्रोह इसके विपरीत कार्य करता है। वह उस बाँध को तोड़कर पानी दूर तक बहाता है। अतः परंपरा पंगु बनाती है किन्तु विद्रोह गतिशील बनाता है।

(v) परंपरा और विद्रोह के संघर्ष का परिणाम यह होता है कि समाज प्रगति करता है। वही वास्तविक प्रगति होती है।

(vi) शिक्षा का मुख्य ध्येय है—शंका की प्रवृति को उकसाना। तभी तो शंका से विद्रोह और विद्रोह से प्रगति संभव हो पाती है।

(vii) **विनय**—अविनय/उच्छृंखल

आचरण—आचरणहीन

(*viii*) **विद्रोह** शब्द भाववाचक संज्ञा है, **विद्रोही** विशेषण शब्द है जिसका अर्थ है—विद्रोह करने वाला।

(*ix*) **अनुशासन**—'अनु' उपसर्ग + शासन
शंकालु—शंका शब्द + 'लु' प्रत्यय

(*x*) **बाँध**—बंध
कर्म—करम/काम

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दो में से क्या तुम्हें चाहिए, कलम या कि तलवार?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति अजेय, अपार?
अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे, मीठे गान?
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर जा मैदान?
जला ज्ञान का दीप सिर्फ फैलाओगे उजियाली?
अथवा उठा कृपाण करोगे घर की भी रखवाली?
कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगानेवाली,
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगानेवाली,
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे
और प्रज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे?
लहू गर्म रखने को रक्खो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार।
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिनगारी।
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार,
क्या चिन्ता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार?

(*i*) कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(*ii*) 'कलम' और 'तलवार' किनके प्रतीक हैं और उनका क्या उपयोग है? 2

(*iii*) कवि कलम को देश की बड़ी शक्ति क्यों मानता है? *दो* कारण लिखिए। 2

(*iv*) उन *दो* स्थितियों का वर्णन कीजिए जहाँ पर तलवार न होने पर भी हमें चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं होगी। 2

(*v*) आप तलवार और कलम में से किसे श्रेष्ठ मानते हैं और क्यों? 1

उत्तर—(*i*) शीर्षक—**कलम और तलवार**

(*ii*) कलम बुद्धिवाद का प्रतीक है। यह मानसिक शक्ति, विचार-क्रांति का साधन और प्रेरणा जगाने वाली ताकत है। तलवार शक्ति का प्रतीक है। कलम भाव जगाने का कार्य करती है किन्तु तलवार का उपयोग हिंस्र को शांत करने का साधन है। यह अत्याचार, अन्याय से लड़कर अपने अस्तित्व को कायम रखने का साधन है।

(*iii*) कवि के विचार से कलम देश की सबसे बड़ी शक्ति है क्योंकि—

1. यह भावों को जगाती तथा दिल और दिमाग में आग लगा देने वाली है।

2. कलम ही विचारों के अंगारे पैदा करती है जिसके आधार पर देश स्वतंत्र रहता है।

(*iv*) 1. जहाँ मानव के हृदय में वीरता के शोले जलते रहते हैं तथा

2. बाँहों में शक्ति रूपी बिजली की स्फूर्ति होती है, वहाँ हाथ में तलवार नहीं रहे तो भी कोई चिन्ता की बात नहीं है।

(*v*) मेरे विचार में तलवार की अपेक्षा कलम श्रेष्ठ है क्योंकि कलम भावों को जगाती है, विचारों में उत्तेजना पैदा करती है। वह मन-मस्तिष्क को क्रियाशील बनाती है, जन-जागृति लाती है, विचार-क्रांति द्वारा प्रगति के मार्ग खोलती है। कलम ज्ञान का प्रकाश प्रदान करती है और जीवन को दिशा प्रदान करती है।

अथवा

डरो नहीं मेरे बच्चे!
सारे सपने डराऊ नहीं होते
न अँधेरे में ही इतना दम
कि तुम्हारी मासूम दुनिया को
तुमसे छिपा कर रख सके।
सवेरा होते ही
फिर ठंडी हवा में तैरने लगेगी
ताज़ा फूलों की गंध,
फिर आबाद हो उठेंगी गलियाँ
चौक में उभरेगा नन्हें साथियों का शोर
सूरज की पहली किरण के साथ
फिर फूटेंगे ख़ुशी के फव्वारे!
तुम्हारी नन्हीं आँखों के सामने
घूमता ये दुनिया का गोल नक्शा
तुम्हारी इच्छाओं से बहुत छोटा है।
दुनिया को अगर तुमने
गेंद की तरह समझा और खेलना चाहा है

तो इसमें डरने की कोई बात नहीं;
बस इतना भर ख्याल रहे—
गेंद की हिफ़ाज़त करना
तुम्हारा अपना ज़िम्मा है!
वक्त कभी ठहरता नहीं है मेरे बच्चे!
न करता है किसी के लिए इन्तज़ार,
वह निरंतर चलता रहता है
हमारी साँस की तरह—
आग, पानी और हवा से
हमारी पहचान कराता हुआ।

(*i*) कविता का उचित शीर्षक दीजिए। 1

(*ii*) 'अँधेरा' किसका प्रतीक है? अँधेरे में क्या करने की शक्ति नहीं है? 1

(*iii*) सवेरे के समय होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 2

(*iv*) भाव स्पष्ट कीजिए— 2

'गेंद की हिफ़ाज़त करना,
तुम्हारा अपना ज़िम्मा है'।

(*v*) समय की किन्हीं *दो* विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 2

उत्तर—(*i*) शीर्षक—**समय का प्रवाह / समय-परिवर्तन**

(*ii*) अंधेरा भय, निराशा, भ्रांति एवं अज्ञान का प्रतीक है। अंधेरे में इतनी शक्ति नहीं है कि बच्चों की मासूम दुनिया को उनसे छिपाकर रख सके।

(*iii*) सवेरा होने पर प्रकृति में अनेक प्रकार के परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं। जैसे—ताज़े खिले फूलों की सुगंध हवा में तैरने लगेगी। गलियाँ आबाद हो उठेंगी। बच्चों का शोर चौक पर गूँज उठेगा। सूर्य की किरणों के फूटने के साथ ही खुशी के फव्वारे फूटने लगेंगे।

(*iv*) इस पंक्ति का भाव यह है कि पृथ्वी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व भावी पीढ़ी पर है। अत: बच्चे अपने सुरक्षित और सुखमय जीवन के लिए धरती को सुरक्षित रखने का हर संभव प्रयास करें। यदि यह पृथ्वी सुरक्षित है तो हम सुरक्षित हैं।

(*v*) समय की विशेषताएँ—

1. समय गतिशील है, वह कभी रुकता नहीं।
2. वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।
3. समय हमारी पहचान आग, पानी तथा हवा से कराता हुआ आगे बढ़ता रहता है।

खण्ड 'ख'

3. ग्यारहवीं कक्षा में विज्ञान विषय देने की प्रार्थना करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

सेवा में
श्रीमान् प्रधानाचार्य जी
राजकीय वरि० मा० विद्यालय
सोनीपत

मान्यवर

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में छठी कक्षा से पढ़ रहा हूँ। दसवीं कक्षा उतीर्ण करने के बाद मैं विज्ञान विषय से ग्यारहवीं, बारहवीं करना चाहता हूँ। दसवीं कक्षा में मेरे अंक उम्मीद से कम प्राप्त हुए हैं। अत: विज्ञान-वर्ग में प्रवेश न देकर साहित्य-वर्ग में प्रवेश देने की बात कही जा रही है। मैं आपको पूरा विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि परिश्रम करने में मैं कोई कसर नहीं छोड़ूँगा और आगामी परीक्षाओं में अधिकाधिक अंक प्राप्त करके आपको संतुष्ट कर दूँगा।

अत: आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि मुझे विज्ञान विषय देने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
रवीन्द्रनाथ
अनुक्रमांक—22
दिनांक—5 जुलाई 2009

अथवा

अपनी बस्ती के निकट नया बस-स्टॉप बनाने का अनुरोध करते हुए क्षेत्रीय परिवहन-अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में
क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी
गोहाना क्षेत्र
सोनीपत

विषय—नया बस-स्टॉप बनाने के लिए अनुरोध

मान्यवर

निवेदन है कि गोहाना से सोनीपत-दिल्ली मार्ग पर आने-जाने वाली बसें नंदी चौक, शास्त्री कॉलोनी पर नहीं रुकती हैं। कई बार घंटों खड़े रहने पर भी कोई बस चालक-परिचालक कष्ट करके बस नहीं रोकता। प्रतीक्षा करने वाले लोगों में सभी

युवा नहीं होते तथा न ही सभी समर्थ होते हैं। उनमें से कुछ वृद्ध होते हैं, कुछ महिलाएँ होती हैं तथा कुछ छोटे बच्चे होते हैं। उनपर भी कोई दया नहीं करता। इसी प्रकार कभी सर्दी, कभी गर्मी और कभी बरसात की मार ऊपर से पड़ती है। पूछने पर सभी चालक-परिचालक साफ जवाब देते हैं कि यहाँ स्टॉप नहीं है, भला कैसे बस रोक दूँ। ऐसी दशा में यात्रियों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए एक नया बस-स्टॉप बनाने की अनुमति प्रदान कर देंगे तो आप की अति कृपा होगी।

अत: आपसे अनुरोध है कि एक नया बस-स्टॉप शास्त्री कॉलोनी के लिए प्रदान करके हमें अनुगृहीत करें।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

सोनीपत

दिनांक : 5 अप्रैल 2009

4. निम्नलिखित में से किसी *एक* विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) मीडिया का सामाजिक उत्तरदायित्व

- जागरूकता
- निजी जीवन में दख़ल न देना
- वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा

(ख) धूम्रपान-निषेध कानून

- कानून की आवश्यकता क्यों?
- कानून से लाभ
- सफल कैसे बनाएँ

(ग) बच्चों की शिक्षा में माता-पिता की भूमिका

- शिक्षा का महत्त्व
- माता-पिता का उत्तरदायित्व
- माता-पिता का कर्तव्य-निर्वाह

उत्तर—(क) मीडिया का सामाजिक उत्तरदायित्व

मीडिया लोकतंत्र का प्रहरी है। लोकतंत्र को सही दिशा दिखाने वाला, कर्त्तव्य तथा अधिकारों का बोध कराने वाला मीडिया अपनी अच्छी छवि के लिए सराहा जाता है। लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा किया जाने वाला शासन है। मीडिया देश-विदेश के नागरिकों को, सरकार को तथा प्रशासनिक अधिकारियों आदि सभी वर्गों को जागरूकता प्रदान करता है। मीडिया का सबसे बड़ा दायित्व यह है कि किसी के निजी जीवन में किसी प्रकार का दखल न दे। आजकल स्टिंग ऑपरेशन द्वारा किसी के भी निजी जीवन में दखल देने की बातें प्रकाश में आने लगी हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की दृष्टि से यह कार्य सराहनीय नहीं कहा जा सकता। आजकल यह भी देखा जा रहा है कि अपनी प्रसिद्धि पाने के लिए कुछ निजी चैनल व्यक्तिगत जीवन में अधिक से अधिक दखल देने में भी नहीं हिचकते। अत: यह आवश्यक है कि मीडिया व्यक्तिगत जीवन में दखल न दे। आज का युग वैज्ञानिक युग है। समाज का विकास वैज्ञानिक सोच से ही संभव है। अत: मीडिया को चाहिए कि वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दे।

(ख) धूम्रपान-निषेध कानून

उत्तम स्वास्थ्य, उत्तम नागरिक, उत्तम राष्ट्र! यह एक नारा मात्र नहीं है; बल्कि साकार सोच का प्रतीक है। जिस राष्ट्र के नागरिक स्वस्थ्य रहेंगे, वही राष्ट्र स्वस्थ राष्ट्र कहलाने का हकदार है। धूम्रपान स्वास्थ्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। यह व्यक्ति, समाज, राष्ट्र सभी का दुश्मन है। अत: धूम्रपान निषेध कानून की परम-आवश्यकता है। यदि कानून बनाया जाए तो इसका पालन करने के लिए शिक्षित-अशिक्षित हर नागरिक तत्पर रहे। इससे उनका तथा उनके पास रहने वालों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा, दूसरों को कोई असुविधा नहीं रहेगी। कानून के अभाव में नशेड़ी नहीं मानेंगे। अत: सख़्त कानून बनाने से समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इसका लाभ संपूर्ण समाज और राष्ट्र को मिल सकता है। धूम्रपान कानून को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सरकार, पुलिस-प्रशासन तथा जनता—सभी वर्ग कानून का पालन स्वयं भी करें तथा दूसरों से भी कराएँ। कानून को कठोर बनाने की आवश्यकता है तथा उल्लंघन करने वालों के लिए कठोर दंड का प्रावधान भी अपेक्षित है।

(ग) बच्चों की शिक्षा में माता-पिता की भूमिका

''परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला है'' इसका कारण यह है कि जब कोई बच्चा पैदा होता है तो परिवार से ही अनौपचारिक रूप से शिक्षा ग्रहण करता है। परिवार में अनेक सदस्य रहते हैं। किन्तु बच्चा सबसे अधिक माँ के पास रहता है। संयुक्त परिवार-प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो चली है। अत: माता के बाद पिता का स्थान आता है। शिक्षा से मनुष्य पशुता का त्याग करके सामाजिक बन जाता है। अत: शिक्षा का महत्त्व स्वयं सिद्ध हो जाता है। माता-पिता का यह दायित्व है कि प्रथम तो अनौपचारिक रूप से ज्ञान प्रदान करके बच्चों को लाभ प्रदान करें। उन्हें शिक्षा संबंधी अनेक रोचक कहानियाँ सुनाएँ,

उनकी रुचि, योग्यता तथा प्रवृत्ति के अनुसार बड़े होने पर शिक्षा सुविधा प्रदान करें। यदि माता-पिता अपना कर्त्तव्य-निर्वाह तन-मन-धन से करें तो सफलता में संदेह नहीं रह जाएगा। एक उत्तम नागरिक का निर्माण करके माता-पिता परिवार, समाज तथा राष्ट्र का नाम उजागर कर सकते हैं।

खण्ड 'ग'

5. (क) शब्द और पद में अंतर स्पष्ट कीजिए। 1

(ख) रेखांकित पदबंधों के नाम लिखिए : 2

(*i*) धीरे-धीरे सरकते हुए वे गुफा से बाहर निकल आए।

(*ii*) समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई थी।

(ग) रेखांकित का पद-परिचय दीजिए : 1

बालक रंगीन पतंग उड़ा रहा है।

उत्तर—(क) देखें 2007 (Set I) का प्रश्न 5(*i*).[पृष्ठ 98

(ख) (*i*) विशेषण पदबन्ध

(*ii*) संज्ञा पदबन्ध

(ग) **पद परिचय—**

पतंग—जातिवाचक संज्ञा—एकवचन—स्त्रिलिंग—कर्मकारक—उड़ा रहा है—क्रिया का कर्म—रंगीन विशेषण का विशेष्य।

6. (क) रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए : 2

(*i*) वह नहीं आ पाया क्योंकि व्यस्त था।

(*ii*) मेरी एक बहन है और वह डॉक्टर है।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए : 2

(*i*) मेहनती छात्र कभी असफल नहीं होता।

(मिश्र वाक्य बनाइए)

(*ii*) मोहन बाज़ार से फल लेकर खाने लगा।

(संयुक्त वाक्य बनाइए)

उत्तर—(क) (*i*) मिश्र वाक्य

(*ii*) संयुक्त वाक्य

(ख) (*i*) जो छात्र मेहनती होता है वह कभी असफल नहीं होता।

(*ii*) मोहन बाज़ार से फल लाया और खाने लगा।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(*i*) पर + उपकार। (संधि कीजिए) 1

(*ii*) वृक्षारोपण। (संधि-विच्छेद कीजिए) 1

(*iii*) ध्यान में मग्न। (समस्त पद बनाइए)। 1

(*iv*) प्रकृत्ति-प्रेमी। (समास-विग्रह कीजिए) 1

उत्तर—(*i*) **पर + उपकार**—परोपकार

(*ii*) **वृक्षारोपण**—वृक्ष + आरोपण

(*iii*) **ध्यान में मग्न**—ध्यानमग्न

(*iv*) **प्रकृत्ति-प्रेमी**—प्रकृत्ति का प्रेमी है जो व्यक्ति विशेष।

8. (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) आँखों में धूल झोंकना 1

(*ii*) खुशी आधी हो जाना 1

(ख) निम्नलिखित कथनों के लिए उपयुक्त लोकोक्तियाँ लिखिए : 2

(*i*) इस वर्ष भी प्रधान जी ने अपने परिवार वालों को ही दुकानें दिलवा दी हैं। सच ही कहा है कि .... देय।

(*ii*) मोहन प्रतिदिन अपने साथियों की पढ़ाई में सहायता करता है। इस प्रकार वह अपना पाठ भी दोहरा लेता है और इस रूप में साथियों की सहायता भी हो जाती है। ठीक ही कहा है .... काज।

उत्तर—(क) (*i*) **आँखों में धूल झोंकना**—पकड़े गए चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गए।

(*ii*) **खुशी आधी हो जाना**—सदा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण होने का समाचार सुनने वाले पिता की खुशी आधी हो गई जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका पुत्र प्रथम नहीं द्वितीय श्रेणी में उतीर्ण हुआ है।

(ख) (*i*) अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय।

(*iii*) एक पंथ दो काज।

9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : 1+1+1+1=4

(*i*) मेरे को आज का समाचार-पत्र दीजिए।

(*ii*) कृप्या उसे यह संदेश देने की कृपा करें।

(*iii*) पेड़ पर लटके बालक ने दो लाल सेब देखे।

(*iv*) आपने यह क्या करा?

उत्तर—(*i*) मुझे आज का समाचार-पत्र दीजिए।

(*ii*) कृपया उसे यह संदेश दीजिए।

या, उसे यह संदेश देने की कृपा करें।

(*iii*) बालक ने पेड़ पर लटके दो लाल सेब देखे।

(*iv*) आपने यह क्या किया?

खण्ड 'घ'

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना, नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय —
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।

नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दु:ख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय॥

(*i*) कवि तथा कविता का नाम लिखिए। 1

(*ii*) कवि ने 'भार' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है? 1

(*iii*) इस भार के संबंध में वह ईश्वर से क्या प्रार्थना कर रहा है? 1

(*iv*) जीवन के सुख के क्षणों में कवि क्या कहना चाहता है? 1

(*v*) अंतिम पंक्तियों में कवि किससे क्या अनुनय कर रहा है? 2

उत्तर—(*i*) **कवि**—रवीन्द्रनाथ टैगोर

कविता—आत्मत्राण

(*ii*) कवि ने 'भार' शब्द का प्रयोग भौतिक जीवन के अभाव से प्राप्त पीड़ा के लिए किया है। उन्होंने इसे मानसिक पीड़ा का प्रतीक माना है।

(*iii*) कवि ईश्वर से यह प्रार्थना करता है कि वे भले ही सांत्वना न प्रदान करें किन्तु इस भार को निर्भय होकर वहन कर सकने की शक्ति अवश्य प्रदान करें।

(*iv*) जीवन के सुख के क्षणों में कवि चाहता है कि वह ईश्वर के प्रति नतमस्तक रहे तथा उसे कभी न भूले।

(*v*) अंतिम पंक्तियों में कवि ईश्वर से यह अनुनय कर रहा है कि काल रूपी रात्रि में यदि सारी धरती उसके साथ धोखा-धड़ी करे तब भी वह ईश्वर पर किसी तरह का संदेह न करे।

अथवा

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुंजर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर॥

(*i*) कवि एवं कविता का नाम लिखिए। 1

(*ii*) 'नरहरि' रूप किसने धारण किया था और क्यों? 2

(*iii*) 'हरि आप हरो जन री भीर' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(*iv*) 'कुंजर पीर' क्या थी और वह कैसे दूर हुई? 1

(*v*) द्रोपदी के चीर-हरण के उदाहरण द्वारा मीरा क्या प्रार्थना कर रही हैं? 1

उत्तर—(*i*) **कवयित्री**—मीराबाई

कविता—पद

(*ii*) नरहरि रूप भगवान विष्णु के चौदह अवतारों में से एक है। उन्होंने यह अवतार अथवा रूप इसलिए धारण किया था ताकि हिरण्यकशिपु का वध कर सकें और भक्त प्रहलाद की रक्षा कर सकें।

(*iii*) 'हरि आप हरो जन री भीर' पंक्ति का भाव यह है कि भगवान श्रीकृष्ण ही जन-जन के दुख का हरण कर सकते हैं। वे दयालु हैं, भक्त वत्सल हैं। अत: भक्तों की पीड़ा स्वयं दूर करने वाले हैं।

(*iv*) भगवत् कथा में 'गजेन्द्र मोक्ष' प्रकरण के अंतर्गत ऐसा वर्णन मिलता है कि एक हाथी भगवान को चढ़ाने के लिए प्रतिदिन नदी से फूल तोड़कर लाता था। एक दिन उसे मगरमच्छ ने पकड़ लिया और उसे पानी में खींचने लगा। असहाय गजेन्द्र ने आर्तनाद किया जिसे सुनकर भगवान ने वहीं से चक्र सुदर्शन फेंक दिया (चला दिया)। उससे मगरमच्छ का सिर कटकर धड़ से अलग हो गया। इस प्रकार भगवान ने गजराज के कष्ट को दूर किया और वह बच गया।

(*v*) द्रौपदी के चीर हरण के उदाहरण द्वारा मीरा बाई यह प्रार्थना कर रही हैं कि उसी प्रकार भगवान मेरी भी लाज रखना, लाज बचाना। मेरे दु:ख दर्द को स्वयं दूर कीजिए।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3+3+3=9

(*i*) 'कर चले हम फ़िदा' कविता किस पृष्ठभूमि में लिखी गई थी? स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) कबीर की साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

(*iii*) कवि ने 'मनुष्यता' कवि में दधीचि, कर्ण एवं उशीनर का उदाहरण देकर क्या संदेश दिया है?

(*iv*) 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

उत्तर—(*i*) 'कर चले हम फिदा' कविता चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में लिखी गई थी जिसे फिल्म हकीकत में गीत के रूप में प्रस्तुत किया गया था। युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई

इस कविता में भारत के वीर सैनिकों के पवित्र हृदय का उद्‌गार व्यक्त हुआ है। भारतीय जनमानस को इस कविता से ऐसी प्रेरणा मिलती है कि सभी देश के लिए प्राण न्यौंछावर करने के लिए तत्पर रहें तथा राष्ट्र धर्म को सबसे बड़ा धर्म समझें।

(*ii*) देखें 2003 (Set I) का प्रश्न 11(*i*). [पृष्ठ 25

(*iii*) देखें 2003 (Set I) का प्रश्न 12(*ii*). [पृष्ठ 25

(*iv*) देखें 2009 (I Outside Delhi) का प्रश्न 12(ग). [पृष्ठ 179

झरने की तुलना मोतियों की लड़ियों से की गई है।

12. (क) कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है? 'तोप' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 3

(ख) कबीर के अनुसार 'निंदक' किस प्रकार हमारे स्वभाव को निखारने में सहायक होता है? वे निंदक के साथ कैसा व्यवहार करने का सुझाव देते हैं? 2

उत्तर—(क) कम्पनी बाग में रखी तोप यह सीख देती है कि कोई व्यक्ति कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो परन्तु एक दिन तो वह शक्तिरहित हो ही जाता है। शक्तिशाली शत्रुओं के छक्के छुड़ा देने वाले वीर भी एक न एक दिन धूल में लोटते दिखाई देते हैं।

(ख) निंदक व्यक्ति बिना साबुन और पानी के ही हमारे स्वभाव को निर्मल बनाता है। अर्थात वह निंदा कर-करके हमारे अंदर छिपी हुई कमियों को निकालता रहता है। इस प्रकार हमारा मन स्वच्छ हो जाता है।

इस आधार पर संत कवि कहते हैं कि ऐसे निंदक व्यक्ति को हमेशा अपने निकट रखना चाहिए। यहाँ तक कि अपने आँगन में ही उसकी कुटी बनवा देनी चाहिए।

13. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जब से कानून-भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। इधर कौंसिल की तरफ़ से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

(*i*) पाठ और लेखक का नाम लिखिए। 1

(*ii*) इस घटना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संक्षेप में वर्णन कीजिए। 2

(*iii*) इस सभा को 'ओपन लड़ाई' क्यों कहा गया है? 1

(*iv*) 'खुला चैलेंज' का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर—(*i*) **पाठ**—डायरी का एक पन्ना

लेखक—सीताराम सेकसरिया

(*ii*) सन् 1930 की 26 जनवरी को कांग्रेस अधिवेशन के निर्णय के अनुसार भारत में प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। 26 जनवरी सन् 1931 को साल गिरह मनाने के लिए कोलकाता में जगह-जगह पर तिरंगा फहराया गया। देशभक्तों, स्वतंत्रता सेनानियों ने अंग्रेज़ी पुलिस का विरोध किया। पुलिस के लाठी-चार्ज से नर-नारी घायल हुए, कुछ जेलों में भी भरे गए किन्तु देशभक्तों ने हार नहीं मानी।

(*iii*) इस सभा को 'ओपन लड़ाई' इसलिए कहा गया है कि स्वतंत्रता सेनानियों ने अंग्रेज़ों का विरोध छिपकर नहीं; बल्कि आमने-सामने रहकर किया। उन्होंने अंग्रेज़ी पुलिस से टक्कर ली तथा उनके दमनकारी चक्र को चुनौती दी और पुलिस का वीरता पूर्वक सामना किया।

(*iv*) 'खुला चैलेन्ज' का आशय है कि विरोधी सरकार की गलत नीतियों को खुलकर चुनौती देना और जो कहना, उसे कर के दिखाना। कौंसिल की तरफ से नोटिस निकाला गया कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। अंग्रेज़ों ने भाग लेने वालों को दोषी ठहराया किन्तु भारतीयों ने खुला चैलेंज देकर सभा की।

अथवा

हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। ...अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे। एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग की रफ़्तार हमेशा तेज ही रहती है। उसे 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हज़ार गुना अधिक रफ़्तार से दौड़ने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है जिससे मानसिक रोग यहाँ बढ़ गए हैं।

(*i*) पाठ और लेखक का नाम लिखिए। 1

(*ii*) मानसिक रोग के क्या कारण और लक्षण बताए गए हैं? 2

(*iii*) '...अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे'—आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(*iv*) आधुनिक जीवन की तेज़ रफ़्तार को किस रूप में स्पष्ट किया है? 1

उत्तर—(*i*) **पाठ**—पतझड़ में टूटी पतियां—II झेन की देन
लेखक—रवीन्द्र केलेकर

(*ii*) मानसिक रोग का कारण है—जापानियों के जीवन की रफ़्तार का बढ़ जाना। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है ......। ये सारी बातें मनोरोग अर्थात मानसिक बीमारी के लक्षण हैं। इससे मानसिक तनाव बढ़ता है और व्यक्ति मनोरगी बन कर रह जाता है।

(*iii*) '...अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे'—कथन का आशय यह है कि अमेरिका जैसी समृद्धि लाने के लिए जापानी दौड़-भाग तथा दिमागी इंजन को स्पीड इंजन बनाने में लगे हैं। वे तेज़ी से प्रगति करके अमेरिका की बराबरी करना चाहते हैं।

(*iv*) आधुनिक जीवन की तेज़ रफ़्तार को इंजन के रूप में स्पष्ट किया गया है। दिमाग को तेज़ चलाने के लिए स्पीड का इंजन लगाने की बात कही गई है। इससे दिमागी तनाव बढ़ता है और मनुष्य मनोरोगी बन कर रह जाता है।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3+3+3=9

(*i*) 'बड़े भाई साहब' कहानी में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीक़ों पर व्यंग्य किया है?

(*ii*) फ़िल्म-निर्माता के रूप में शैलेंद्र की किन्हीं **तीन** विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(*iii*) उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिए कि वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था।

(*iv*) 'मेरा एक भाई भी पुलिस में है ....' ख्यूक्रिन का यह कथन समाज की किस वास्तविकता की ओर संकेत करता है? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर—(*i*) 'बड़े भाई साहब' कहानी में लेखक ने समूची शिक्षा के निम्नलिखित तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है—

1. छात्रों के ऊपर अनेक विषयों के पढ़ने का भार लाद दिया जाता है।

2. छात्रों की रुचि, योग्यता, प्रवृत्ति एवं मानसिक क्षमता का ध्यान नहीं रखा जाता है।

3. विषय को समझने की अपेक्षा रटने पर अधिक बल दिया जाता है।

4. वर्तमान शिक्षा-पद्धति भी दोषपूर्ण तथा अमनोवैज्ञानिक है।

(*ii*) देखें 2009 (I Delhi) का प्रश्न 14(घ). [पृष्ठ 167

(*iii*) देखें 2005 (Set I) का प्रश्न 15(*i*). [पृष्ठ 64

(*iv*) 'मेरा एक भाई भी पुलिस में है....' ख़्यूक्रिन का यह कथन समाज की भ्रष्ट शासन-व्यवस्था को इंगित करता है तथा साधारण जनता के शोषण की व्यथा-कथा की ओर संकेत करता है।

कथानक में वर्णित प्रसंग के अनुसार पुलिसवाले ख़्यूक्रिन को ही दोषी ठहरा रहे थे कि कुत्ते को दोषी क्यों कहते हो, तुम्हारी उंगली में कहीं से कील चुभ गई होगी। इससे सिद्ध होता है कि राज्य में चाटुकार अपना दबदबा बनाए रखने के लिए शासकों और अधिकारियों की खुशामद करते हैं।

यह भी सिद्ध होता है कि साधारण जनता की आवाज़ दबा दी जाती है। जनता शोषण एवं उत्पीड़न का शिकार बनी रहती है।

15. (क) तताँरा-वामीरो की मृत्यु किस प्रकार हुई और उनकी त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया? 3

(ख) 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोज़ा क्यों रखा। इस कार्य से उनकी किस भावना का पता चलता है? 2

उत्तर—(क) देखें 2007 (Set III) का प्रश्न 13(क).
[पृष्ठ 106-107

(ख) लेखक की माँ ने कबूतर के अंडे को सुरक्षित जगह पर ले जाकर रखना चाहा। इतने में वह अंडा ज़मीन पर गिरकर टूट गया। पहला अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था। इस प्रकार दोनों अंडों के टूट जाने पर कबूतर परेशान होकर उड़ते रहे। उन्हें दुखी देखकर लेखक की माँ की आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने प्रायश्चित के लिए पूरे दिन रोज़ा रखकर उपवास किया।

इससे यह पता चलता है कि लेखक की माँ सरल तथा कोमल स्वभाव की दयालु महिला थीं। वे पशु-पक्षी से भी प्रेम रखती थीं। किसी जीव का दुखी होना उनसे देखा नहीं जाता था।

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 4

समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? 'हरिहर काका' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देखें सैम्पल पेपर II का प्रश्न 16 (अथवा).
[पृष्ठ (*xxi*)

अथवा

मास्टर प्रीतमचंद का स्कूल के बच्चों के साथ कैसा

व्यवहार था? आपके विचार में अध्यापक और छात्र के सम्बन्ध का क्या आधार होना चाहिए और क्यों?

उत्तर—मास्टर प्रीतमचंद अनुशासन बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों को कठोर यातनाएँ देने से हिचकिचाते नहीं थे। वह कक्षा को रटने के लिए कहते थे। यदि कार्य पूरा नहीं होता था तो लड़कों को क्रूरता-पूर्ण ढंग से मुर्गा बना देते थे और उन्हें पीठ ऊँची करने का आदेश देते थे। यदि कोई लड़का अपना सिर इधर-उधर हिलाता था तो उसकी खाल उधेड़ देते थे।

मेरे विचार से अध्यापक और छात्र के संबंध का आधार प्रेम, विश्वास एवं आत्मीयता से भरा होना चाहिए क्योंकि डर के मारे बच्चे न तो कोई प्रश्न अध्यापक से पूछते हैं न ही उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है। सीखने तथा सिखाने के बीच अंत:क्रिया का आधार प्रेम तथा विश्वास होता है।

17. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : 2+2+2=6

(*i*) टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

(*ii*) हरिहर काका ने भोजन की थाली आँगन में क्यों फेंक दी थी?

(*iii*) 'अगली कक्षा में जाने के विचार से बच्चे उत्साहित भी होते थे और उदास भी।' 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*iv*) पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था? 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(*i*) देखें सैम्पल पेपर II का प्रश्न 17(*iv*). [पृष्ठ (*xvi*)

(*ii*) देखें 2009 (II Outside Delhi) का प्रश्न 16(ख). [पृष्ठ 182

(*iii*) 'अगली कक्षा में जाने के विचार से बच्चे उत्साहित होते थे और उदास भी।'—इसका कारण था कि एक ओर तो पिछली कक्षा उतीर्ण करके नयी कक्षा के नए पाठ्यक्रम, नई पुस्तकें, नया ज्ञान आदि का आकर्षण था जिससे वे उत्साहित होते थे किन्तु यह सोचकर उदास हो जाते थे कि अगली कक्षा में नई पुस्तकें पढ़नी पड़ेगीं। अब नए अध्यापकों द्वारा पिटाई भी खानी पड़ेगी। मुर्गा बनाने वाले अध्यापक भी वही रहेंगे।

(*iv*) देखें 2005 (Set I) का प्रश्न 17(*iii*). [पृष्ठ 64

Hindi (Course B)—2009
Comptt.
(Set II—Delhi)

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित एक अंत:विद्यालय प्रतियोगिता आयोजित करने की अनुमति माँगते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य जी

एस०डी०एम०उ०मा० विद्यालय

दिल्ली

मान्यवर

सविनय निवेदन यह है कि आजकल पर्यावरण प्रदूषण के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने तथा मानव-जीवन के खतरे की बात की अनिवार्यता को समझते हुए छात्रों में जागरूकता लाने के लिए 'पर्यावरण-संरक्षण' विषय पर अंत:-विद्यालयी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए। यदि आप अनुमति प्रदान करें तो विद्यालय में ऐसा कार्यक्रम आयोजित किया जाए।

अत: आपसे प्रार्थना है कि इस आयोजन की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद

राहुल

अनुक्रमांक—15

कक्षा—दसवी बी०

दिनांक—10 जुलाई 2009

अथवा

बिजली की कटौती के कारण पढ़ाई में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन करते हुए क्षेत्रीय विद्युत् अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर—देखें सैम्पल पेपर II (2008) का प्रश्न 3 (अथवा). [पृष्ठ (*xi*)

खण्ड 'ग'

5. (क) तथा (ख)—देखें प्रश्न 5 (क) तथा (ख), Set I.

(ग) रेखांकित का पद-परिचय दीजिए : 1

माली फूल सजा रहा है।

उत्तर—माली—जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन, कर्ता कारक, 'सजा रहा है' क्रिया का कर्त्ता।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(*i*) भोजन + आलय। (संधि कीजिए) 1

(*ii*) सत्येंद्र। (संधि-विच्छेद कीजिए) 1

(*iii*) रेखा से अंकित। (समस्त पद बनाइए) 1

(*iv*) प्रयोगशाला। (समास-विग्रह कीजिए) 1

उत्तर—(*i*) **भोजन** + **आलय**—भोजनालय

(*ii*) **सत्य** + **इन्द**—सत्येन्द्र

(*iii*) **रेखा से अंकित**—रेखांकित

(*iv*) **प्रयोगशाला**—प्रयोग के लिए शाला

8. (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) सिर फिर जाना। 1

(*ii*) पाला पड़ना। 1

(ख) देखें प्रश्न 8(ख), Set I.

उत्तर (क) (*i*) **सिर फिर जाना**—अरे उसे कौन समझाए कि ऊँट रेगिस्तान में मिलते हैं, असम में नहीं। उसका तो सिर फिर गया है; सिर फिरे को समझाना आप मूर्ख बनना है।

(*ii*) **पाला पड़ना**—जब ईमानदार अधिकारी से पाला पड़ता है तो भ्रष्ट कर्मचारियों की एक नहीं चलती।

9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : **1+1+1+1=4**

(*i*) मैंने भी आपके साथ चलना है।

(*ii*) मेरा भाई वायुयान पर आएगा।

(*iii*) अपनी स्वरचित कविता सुनाओ।

(*iv*) यह निबंध तुमने कब पढ़ी?

उत्तर—(*i*) मुझे भी आपके साथ चलना है।

(*ii*) मेरा भाई वायुयान से आएगा।

(*iii*) अपनी कविता सुनाओ।

या, स्वरचित कविता सुनाओ।

(*iv*) यह निबंध तुमने कब पढ़ा?

खण्ड 'घ'

12. (क) 'कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।'—इस पंक्ति द्वारा कबीर क्या संदेश देना चाहते हैं? 3

(ख) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं? 2

उत्तर—(क) 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।'—इस पंक्ति द्वारा संत कबीर यह संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य को इधर-उधर संसार में भटकने की आवश्यकता नहीं है। अपने अंदर देखने की आवश्यकता है। अर्थात आत्मा को जगाने की आवश्यकता है। आत्मा के दर्शन से परमात्मा की प्राप्ति होगी।

(ख) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में दीपक कवयित्री के शरीर अथवा जीवन का प्रतीक है। इसी प्रकार 'प्रियतम' परमात्मा का प्रतीक है। यह एक रहस्यवादी रचना है। 'रहस्यवाद' में आत्मा प्रेयसी और परमात्मा प्रेमी अथवा प्रियतम का रूप होता है।

15. (क) प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे? 'तंताँरा-वामीरो कथा' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 3

(ख) बादशाह सुलेमान ने चींटियों से क्या कहा? उससे उनके स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है? 2

उत्तर—(क) प्राचीन काल में मनोरंजन के लिए नृत्य, संगीत, वादन आदि का प्रदर्शन किया जाता था। शक्ति-प्रदर्शन के आयोजन की परंपरा में पशु-पर्व का विधिवत् आयोजन किया जाता था। इसके अतिरिक्त युवक कुश्ती तथा व्यायाम द्वारा शक्ति-प्रदर्शन करते थे।

(ख) बादशाह सुलेमान ने चींटियों से कहा कि तुम मेरे लाव-लश्कर और घोड़ों की टापों से मत घबराओ। मैं मानव ही नहीं पशु-पक्षी-जीव-जगत का भी बादशाह हूँ। खुदा ने मुझे सबका रखवाला बनाया है। मैं तुम्हारे लिए मुसीबत नहीं हूँ बल्कि सबके लिए मुहब्बत हूँ।

इससे उनके दयालु स्वभाव का पता चलता है। उनके कोमल स्वभाव, उनकी जीव-जगत के प्रति करुणा-संवेदना का परिचय मिलता है।

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 4

महंत ने हरिहर काका के साथ दो अलग-अलग प्रकार का व्यवहार किस प्रकार और क्यों किया?

उत्तर—हरिहर काका के साथ महंत ने एक तरफ भावुकता का लाभ उठाते हुए कोमल व्यवहार किया। उन्होंने कहा कि ठाकुरबारी के नाम ज़मीन करने से आप का तीनों लोकों में यश फैलेगा तथा आपका जीवन सार्थक हो जाएगा।

दूसरी तरफ अपने साधु-संतों, गुंडों की मदद से काका का अपहरण करवा लिया।

महंत का ऐसा करना काका की ज़मीन हड़पने की लालसा (लोभ) को दर्शाता है। हर नीति लगाकर महंत ज़मीन हड़पना चाहते थे।

अथवा

हेडमास्टर शर्मा जी का स्कूल के बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार था? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(ख) देखें 2008 (II Outside Delhi) का प्रश्न 17(*ii*). [पृष्ठ 132

Hindi (Course B)—2009
Comptt.
(Set III—Delhi)

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I तथा Set II में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. अपने क्षेत्र के बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए विद्यालय के छात्रों से धन एवं कपड़े एकत्रित करने की अनुमति के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। **5**

उत्तर—

सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य जी

डी०ए०वी०उ०मा० विद्यालय

गाज़ीपुर

महोदय

सविनय निवेदन है कि यमुना नदी में बाढ़ आई हुई है। बाढ़ के प्रभाव से अनेक लोग बेघर होकर शिविरों में रह रहे हैं। सरकार तथा अनेक परोपकारी समितियाँ उनके भोजन, वस्त्र का प्रबंध कर रही हैं। मेरे विचार से इस कार्य में हम छात्रों की भी सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। बूँद-बूँद से तालाब भरता है। हमारा सहयोग कम से कम बूँद तो साबित हो सकता है। हम सभी छात्र अपने पॉकेट-मनी से पैसे बचाकर तथा घर से कपड़े भी लाकर बाढ़-पीड़ितों की सहायता करना चाहते हैं। इससे बाढ़-पीढ़ितों को कुछ मदद तो मिलेगी ही, साथ ही हमारे विद्यालय के छात्रों में समाज-सेवा की भावना भी विकसित होगी।

अत: आपसे अनुरोध है कि आप हमें धन एवं कपड़े एकत्र करने की अनुमति प्रदान करें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

समर्थ

कक्षा—दसवीं ए

अनुक्रमांक—25

दिनांक—24 जुलाई 2009

अथवा

दूरदर्शन पर छात्रों के लिए प्रसारित कार्यक्रम विशेष की सराहना करते हुए दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में

निदेशक

डी०डी०-1

दूरदर्शन

नई दिल्ली

विषय—छात्र-उपयोगी कार्यक्रम की सराहना

महोदय

निवेदन है कि दूरदर्शन मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान विकास का साधन है। इस संदर्भ में छात्रों के लिए उपयोगी विज्ञान विषय का ''टर्निंग पॉइंट'' कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय बन पड़ा है। इस कार्यक्रम की रोचकता एक तरफ छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि जगाती है तो दूसरी तरफ उनकी जिज्ञासा शांत करती है। दूरदर्शन की प्रस्तुतियों में यह कार्यक्रम हमारे लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

आशा करता हूँ कि विज्ञान सम्बन्धित ऐसे कार्यक्रम भविष्य में भी चलते रहेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

अनुराग

375, पाना उद्यान

नरेला

दिल्ली

दिनांक—14 जुलाई 2009

खण्ड 'ग'

5. (क) तथा (ख)—देखें प्रश्न 5 (क) तथा (ख), Set I.

(ग) रेखांकित का पद-परिचय दीजिए : **1**

घड़ी मेज़ पर रखी है।

उत्तर—घड़ी—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'रखी है' क्रिया का कर्त्ता।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(*i*) परम + अणु। (संधि कीजिए) 1

(*ii*) मतानुसार (संधि-विच्छेद कीजिए) 1

(*iii*) लक्ष्य से भ्रष्ट। (समस्त पद बनाइए) 1

(*iv*) दिनचर्या (समास-विग्रह कीजिए) 1

उत्तर—(*i*) **परम + अणु—**परमाणु

(*ii*) **मतानुसार—**मत + अनुसार

(*iii*) **लक्ष्य से भ्रष्ट—**लक्ष्यभ्रष्ट

(*iv*) **दिनचर्या—**दिन की चर्या।

8. (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) साये से दूर भागना 1

(*ii*) नाम-निशान मिटा देना 1

(ख) देखें प्रश्न 8(ख), Set I.

उत्तर—(क) (*i*) **साये से दूर भागना**—धर्मात्मा व्यक्ति चोरों की बस्ती में क्यों जाएगा। वह तो पापियों एवं अपराधियों के साये से भी दूर भागता है।

(*ii*) **नाम-निशान मिटा देना**—ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर जैसे ही इस क्षेत्र में आया वैसे ही अपराध का नाम-निशान तक मिट गया।

9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : 1+1+1+1=4

(*i*) हमारे को भी पुस्तक दो।

(*ii*) कृपया हमारे विद्यालय में आने की कृपा करें।

(*iii*) यह पुरानी मिठाई की दुकान है।

(*iv*) क्या आप मेरे साथ चलोगे?

उत्तर—(*i*) मुझे भी पुस्तक दो।

(*ii*) कृपया हमारे विद्यालय में आएँ।

या, हमारे विद्यालय में आने की कृपा करें।

(*ii*) यह मिठाई की पुरानी दुकान है।

(*ii*) क्या आप मेरे साथ चलेंगे?

खण्ड 'घ'

12. (क) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों? 3

(ख) बिहारी के अनुसार राम किस प्रकार के व्यक्ति के मन में निवास करते हैं? 2

उत्तर—(क) देखें 2009 (I Outside Delhi) का प्रश्न 11(ख). [पृष्ठ 179

(ख) कविवर बिहारी के राम उन के हृदय में बसते हैं जो सच्चे हृदय वाले व्यक्ति हैं। अर्थात् छल-कपट, राग-द्वेष की भावना से दूर रहने वाले हैं।

15. (क) तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया? 3

(ख) पैग़ंबर नूह दुखी हो मुद्दत तक क्यों रोते रहे? इससे उनके चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है? 2

उत्तर—(क) देखें 2008 (Comptt. I Delhi) का प्रश्न 14(ग). [पृष्ठ 142

(ख) एक घायल कुत्ते को नूह ने दुत्कारते हुए कहा—'दूर हो जा गंदे कुत्ते!' यह सुनकर कुत्ते ने जवाब दिया 'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इन्सान' हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।

कुत्ते की यह बात सुनकर नूह दुखी हो गए और मुद्दत तक रोते रहे।

इससे उनके भावुक, कोमल, जीव-जगत के प्रति उदार और मनुष्यता जैसे आदर्श चरित्र का परिचय मिलता है।

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 4

हरिहर काका के प्रति उनके भाइयों के व्यवहार में समय-समय पर क्या-क्या परिवर्तन आए और क्यों?

उत्तर—हरिहर काका के प्रति उनके भाइयों के व्यवहार में परिवर्तन आए। सबसे पहले उन्होंने हरिहर काका की सेवा-सत्कार करके उन्हें प्रभावित करना चाहा जिससे काका अपनी ज़मीन उनके नाम करके उन्हें समृद्ध कर दें।

इसके बाद उन्होंने काका को उठाकर घर में बंद किया। उन्हें बुरी तरह मारा-पीटा और ज़मीन के कागजात पर अंगूठा-निशान लगवाया।

अपनी पत्नियों के बुरे व्यवहार के कारण भाइयों ने अपनी अपनी पत्नी को डाँटा-फटकारा और काका के पैर पकड़कर रोते रहे। अंत में उन्हें मनाकर घर ले आए।

इन सभी बातों के पीछे उनका निहित स्वार्थ था कि किसी भी प्रकार काका की ज़मीन उन्हें मिल जाए। इसके लिए वे साम, दाम, दँड और भेद सभी नीतियाँ लगा रहे थे।

अथवा

'सपनों के-से दिन' पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पी०टी० सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—देखें सैम्पल पेपर II (2008) का प्रश्न 16(*ii*). [पृष्ठ (*xvi*)

Hindi (Course B)—2009

Comptt.

(Set I—Outside Delhi)

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश :

*(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं—'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।*

*(ii) चारों खण्डों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।*

(iii) यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

रॉकेट के विकास में आवश्यक कठोर परिश्रम और उसके

लिए प्रतिबद्धता के विषय पर बातचीत में ब्रान मुसकराए और बोले—''रॉकेट-विज्ञान में कठोर परिश्रम ही पर्याप्त नहीं है। यहाँ न सिर्फ़ तुम्हें लक्ष्य को पाना है, बल्कि इसे जितना जल्दी संभव हो सके, हासिल करने के तरीक़े भी निकालने हैं।'

संपूर्ण प्रतिबद्धता का अर्थ केवल कड़ी मेहनत नहीं है। इसमें पूर्ण रूप से शामिल होने का पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह लक्ष्य ही है जो अंतर पैदा करता है। तुम रॉकेट विज्ञान को अपना पेशा, अपनी जीविका मत बनाओ—इसे अपना धर्म समझो, अपना मिशन बनाओ।

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित होकर समर्पित होना चाहिए। मेरे जैसे लोग प्राय: 'कार्य-आधिक्य' से ग्रस्त कहे जाते हैं। लेकिन मुझे इस पर आपत्ति है, क्योंकि यह एक प्रकार की रोगात्मक स्थिति अथवा बीमारी का सूचक है; जबकि वचनबद्धता एवं एकाग्रचित्तता लक्ष्य प्राप्त करने के साधन हैं। यदि मैं वह करता हूँ जिसके लिए मेरी इच्छा दुनिया में कुछ भी होने से ज़्यादा करने की है और जो मुझे ख़ुशी प्रदान करती है, तो ऐसा काम करने को मानसिक आनंद का कारण ही कहा जा सकता है।

लक्ष्य-प्राप्ति के लिए वचनबद्धता का मूलभूत गुण होना आवश्यक है। पूरी क्षमता के साथ काम करने की इच्छा के बाद मुश्किल से ही कोई और इच्छा जन्म ले पाती है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो हर हफ़्ते सौ घंटे तक भी काम करते हैं; क्योंकि उन्हें अपना काम रोमांच पैदा करने वाला, चुनौती भरा एवं अच्छा प्रतिफल देने वाला लगता है। सभी सफल मनुष्यों में पूर्ण वचनबद्धता का गुण ज़रूर पाया जाता है।

शीर्ष पर पहुँचने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति ज़रूरी होती है, चाहे वह माउंट एवरेस्ट हो या आपके कार्यक्षेत्र का शीर्ष स्थल हो। हर व्यक्ति अलग-अलग ऊर्जा लेकर जन्मा है और जो सबसे पहले प्रयास करेगा और अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल करेगा, वही सबसे जल्दी अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाएगा।''

(*i*) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

(*ii*) 'रॉकेट-विज्ञान को पेशा नहीं धर्म मानो।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(*iii*) पूर्ण प्रतिबद्धता से आप क्या समझते हैं? 1

(*iv*) लेखक किस व्यवहार को मानसिक आनंद का कारण मानता है? 1

(*v*) 'कार्य-आधिक्य' से ग्रस्त कहे जाने पर लेखक को आपत्ति क्यों है? 1

(*vi*) लक्ष्य प्राप्ति के लिए कौन-सा गुण आवश्यक है? 1

(*vii*) कैसे व्यक्ति अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाते हैं? 1

(*viii*) 'विज्ञान' एवं 'वचनबद्धता' शब्दों में उपसर्ग एवं प्रत्यय छाँटिए। 1

(*ix*) 'गुण' तथा 'कठोर' शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए। 1

(*x*) 'लक्ष्य' एवं 'परिश्रम' शब्दों के पर्याय लिखिए। 1

(*xi*) 'अंतर' शब्द का विशेषण बनाइए। 1

उत्तर—(*i*) शीर्षक—**रॉकेट विज्ञान और प्रतिबद्धता**

(*ii*) 'रॉकेट विज्ञान को पेशा नहीं धर्म मानो।' इस कथन का यह आशय है कि रॉकेट विज्ञान के विकास को आत्मा की पुकार अथवा आत्मिक सुख का आधार मानना चाहिए। इसके लिए आत्म अनुशासन की बात स्वयं सिद्ध हो जाती है क्योंकि धर्म सर्वोपरि है। अत: उसका पालन करना परम आवश्यक है।

(*iii*) पूर्ण प्रतिबद्धता से तात्पर्य है—हर तरह से तैयार और तन-मन-धन से समर्पित होना।

(*iv*) जिस कार्य के लिए लेखक की इच्छा दुनिया में कुछ भी होने से अधिक करने की है तथा जो कार्य लेखक को प्रसन्नता देता है, वह कार्य उसके लिए मानसिक आनंद का कारण बनता है।

(*v*) 'कार्य-आधिक्य' से ग्रस्त समझना स्वयं को असमर्थ मानना है। यह एक तरह से बीमारी का सूचक है। अत: लेखक इस पर आपत्ति करता है।

(*vi*) लक्ष्य-प्राप्ति के लिए मूलत: वचनबद्धता का गुण आवश्यक है।

(*vii*) जिन व्यक्तियों के लिए उनका कार्य रोमांच पैदा करने वाला, चुनौती भरा और अच्छा प्रतिफल देने वाला होता है ऐसे मनुष्य अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाते हैं।

(*viii*) **विज्ञान—वि** उपसर्ग + ज्ञान
वचनबद्धता—वचनबद्ध + **ता** प्रत्यय

(*ix*) गुण—दोष अथवा अवगुण
कठोर—कोमल

(*x*) **लक्ष्य**—उद्देश्य
परिश्रम—मेहनत

(*xi*) **अंतर**—आंतरिक

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

''तुझको या तेरे नदीश, गिरि, वन को नमन करूँ मैं?

मेरे प्यारे देश! देह या मन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?
भू के मानचित्र पर अंकित त्रिभुज, यही क्या तू है?
नर के नभश्चरण की दृढ़ कल्पना नहीं क्या तू है?
भेदों का ज्ञाता, निगूढ़ताओं का चिर ज्ञानी है;
मेरे प्यारे देश! नहीं तू पत्थर है, पानी है।
जड़ताओं में छिपे किसी चेतन का नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?
तू वह, नर ने जिसे बहुत ऊँचा चढ़कर पाया था;
तू वह, जो संदेश भूमि को अम्बर से आया था।
तू वह, जिसका ध्यान आज भी मन को सुरभित करता है;
थकी हुई आत्मा में उड़ने की उमंग भरता है।
गंध-निकेतन इस अदृश्य उपवन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?''

(*i*) कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(*ii*) कवि ने भारत देश को 'मानचित्र पर अंकित त्रिभुज' क्यों कहा है? 1

(*iii*) 'किसको नमन करूँ' का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि के मन में किस बात का संशय है? 2

(*iv*) देश की किसी ऐसी उल्लेखनीय विशेषता का उल्लेख कीजिए जो कवि को प्रोत्साहित करती है। 1

(*v*) कवि ने भारतवर्ष की 'देह' किसे माना है? 1

(*vi*) 'जड़ताओं में छिपे किसी चेतन' से कवि का क्या आशय है? 2

उत्तर—(*i*) शीर्षक—**किसको नमन करूँ मैं भारत**! *अथवा* **भारत नमन / भारत वंदना**

(*ii*) कवि ने भारत देश को 'मानचित्र पर अंकित त्रिभुज' इसलिए कहा है क्योंकि संसार के मानचित्र में भारत का मानचित्र एक त्रिभुज के आकार का बनता है। इसी से इसकी पहचान होती है।

(*iii*) 'किसको नमन करूँ' का अभिप्राय यह है कि कवि को भारत की अनेक अच्छाइयाँ प्रभावित करती हैं, वह समझ नहीं पाता कि किन-किन अच्छाइयों का गुणगाण करे तथा किन-किन की वंदना करे।

कवि के मन में इस बात का संशय है कि वह अपनी श्रद्धा, भक्ति आखिर किस पर दिखाए—भारत माता के शरीर की वंदना करके दिखाए या मन को नमस्कार करे तथा उसकी वंदना करे।

(*iv*) कवि को प्रोत्साहित करने वाली विशेषताएँ हैं—

1. भारत देश भेदों (रहस्यों) का ज्ञाता है।
2. छिपे हुए रहस्यों का चिर ज्ञानी है।
3. जड़ता में छिपा हुआ चेतन तत्त्व है।

(*v*) कवि ने भारतवर्ष की देह नदी, सागर, पहाड़ और वन को माना है।

(*vi*) जड़ताओं में छिपे किसी चेतन से अभिप्राय है कि संसार के अन्य देशों के समान ऊपर से हमारा देश भी पत्थर मिट्टी, नदी, पहाड़ से बना हुआ जड़ दिखाई देता है, किन्तु यह सचेतन है, प्राणवान है। यहाँ की प्रकृति सहृदय, संयम, संवेदनशील है जो प्राणियों का कल्याण करती है।

अथवा

''यह दुनिया
जैसी और जिस रूप में
हमें जीने को मिली है
उस पर अफ़सोस करना बेमानी है,
हमने नहीं बिगाड़ी इसकी शक्ल
न थोपी किसी पर अपनी इच्छाएँ—
जब चारों तरफ़ से
सुलग रही हो आग—
तो हालात से निरापद बैठे रहना
यों आसान नहीं है,
उफनती धारा के विपरीत
तैर कर जाना यों उस पर
फ़कत दिखाता नहीं है अच्छे अभ्यास का,
महज तमाशा नहीं है
निकल आना सड़कों पर
सरे आम
और अंधेरगर्दी के खिलाफ़
यों खड़े रहना मशालें तान कर!
मैं जानता हूँ
यह वक्त
तुम्हें उस आग में झोंक देने का नहीं है
लेकिन उसकी आँच से बचाए रखना भी
कम-मुश्किल नहीं है काम—
अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद
अक्सर झुलस जाया करते हैं तुम्हारे पाँव
यह सच है मेरे बच्चे!

यह आदिम—अँधेरा
हमारे काबू से बहुत बाहर है—
बहुत मामूली-सी है इतिहास में
एक पिता के रूप में मेरी पहचान,
मेरी दीठ का दायरा बहुत सीमित है
बहुत नामालूम-सा है
अपनी कारगुज़ारी का संसार,
बावजूद इसके
मुझ पर भरोसा रखो मेरे बच्चे!
सपनों की इस त्रासद अँधेरी दुनिया में
मैं हर वक्त तुम्हारे साथ होता हूँ।''

(*i*) कविता का उचित शीर्षक दीजिए। 1

(*ii*) कविता में कौन किसको संबोधित कर रहा है? 1

(*iii*) कवि दुनिया की वर्तमान हालत पर अफ़सोस करना अर्थहीन क्यों मानता है? 1

(*iv*) किन परिस्थितियों में निरापद बैठना आसान नहीं होता? 1

(*v*) 'आग' को किसका प्रतीक माना गया है? 1

(*vi*) 'अंधेरगर्दी के खिलाफ़ मशालें तान कर खड़े होने' का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(*vii*) 'अक्सर झुलस जाया करते हैं तुम्हारे पाँव' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—(*i*) शीर्षक—**पिता की सीख / संसार और हम**

(*ii*) कविता में एक पिता अपने बच्चे को संबोधित कर रहा है।

(*iii*) कवि दुनिया की वर्तमान हालत पर अफ़सोस करना अर्थहीन इसलिए मानता है क्योंकि हमारे अफ़सोस करने से दुनिया नहीं बदलेगी। हमें हर हालत में दुनिया के वर्तमान हालात से समझौता करना ही पड़ेगा। हो सके तो स्वयं को बुराइयों के प्रभाव से बचाए रखें तथा अपनी पहचान कायम रखें। इतना ही बहुत है।

(*iv*) जब चारों तरफ से आग सुलग रही हो तो हालात से निरापद बैठे रहना आसान नहीं होता।

(*v*) 'आग' शब्द विध्वंस, विघटनकारी एवं अंधेरगर्दी या दहशतगर्दी का प्रतीक है। चारों तरफ से सुलगती आग का यही अर्थ है कि शोषण, उत्पीड़न, विघटनकारी तत्त्व चारों तरफ अशांति मचाए रहते हैं।

(*vi*) अंधेरगर्दी के खिलाफ मशालें तानकर खड़े होने का भाव यह है कि शोषण, उत्पीड़न एवं विषमता का कठोरता से मुकाबला किया जाए।

(*vii*) 'अक्सर झुलस जाया करते हैं तुम्हारे पाँव' का आशय यह है कि वातावरण में जो विषमता, शोषण रूपी आग लगी हुई है उसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव अवश्य पड़ता है। उस आग की बुराई से कोई अछूता अर्थात् प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है।

खण्ड 'ख'

3. विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर चरित्र-प्रमाण-पत्र देने के लिए प्रार्थना कीजिए। 5

उत्तर—देखें 2008(Comptt. II Delhi) का प्रश्न 4.

[पृष्ठ 143

अथवा

हिन्दी विषय को अधिक रुचिकर बनाने के लिए सुझाव देते हुए शिक्षा-अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में,
शिक्षा अधिकारी
चंडीगढ़
हरियाणा

विषय—हिन्दी को रुचिकर बनाने के लिए सुझाव

महोदय

निवेदन है कि हिन्दी की दयनीय दशा दिन-प्रतिदिन कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही है। प्राय: बच्चे हिन्दी पढ़ने तथा बोलने से कतराते हैं तथा अशुद्ध उच्चारण करते हैं। इस दिशा में आवश्यक है कि हिन्दी को रोचक ढंग से पढ़ाया जाए जिससे बच्चों की रुचि हिन्दी सीखने में बढ़ सके।

इसके लिए छोटे-स्तर से बड़े स्तर पर सुलेख प्रतियोगिता, काव्य-पाठ-प्रतियोगिता, कहानी-लेखन, भाषण प्रतियोगिता तथा निबंध-लेखन प्रतियोगिता करायी जानी चाहिएं। इसके अतिरिक्त शिक्षण-सामग्री का प्रयोग जैसे—चार्ट, मॉडल द्वारा शिक्षण करके छात्रों की रुचि जाग्रत की जा सकती है। कादम्बिनी, नंदन तथा सुमन-सौरभ जैसी हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को पढ़कर भी छात्रों में हिन्दी के प्रति रुचि जाग्रत हो सकती है।

हिन्दी की सरलता तथा वैज्ञानिकता के बारे में जानकारी देकर भी छात्रों को हिन्दी सिखाई जा सकती है। इस दिशा में संकलपशक्ति के साथ उतरने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रशासन का सहयोग अपेक्षित है।

सधन्यवाद
सुधीर कुमार
अध्यक्ष—हिन्दी सुधार समिति
परिमल वाटिका
72 आर, मॉडल टॉउन
पानीपत
हरियाणा
दिनाँक ....

4. निम्नलिखित में से किसी *एक* विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) खेलकूद का छात्र-जीवन में महत्त्व
- पढ़ाई और खेलकूद का सम्बन्ध
- दोनों पक्षों में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता
- संतुलन के लिए सुझाव

(ख) ऊर्जा-बचत : हमारा उत्तरदायित्व
- ऊर्जा-बचत क्यों आवश्यक है?
- हम किस प्रकार सहायक हो सकते हैं?
- उपयोगी सुझाव

(ग) कक्षा में अध्यापक की भूमिका
- कक्षा में अध्यापक के कर्तव्य
- विषय को समझाने की योग्यता
- समानता का व्यवहार

उत्तर—(क) **खेलकूद का छात्र-जीवन में महत्त्व**

'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।' अत: मानसिक स्वास्थ्य के लिए शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता सर्व सम्मति से स्वीकार की गई है। जिस प्रकार मानसिक विकास के लिए पढ़ाई-लिखाई अनिवार्य है, उसी प्रकार उत्तम स्वास्थ्य के लिए अथवा शारीरिक विकास के लिए खेलकूद आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। ऐसी दशा में यह भी आवश्यक है कि शारीरिक और मानसिक विकास में से किसी एक को महत्त्व तथा दूसरे की उपेक्षा भी उचित नहीं कही जा सकती। प्राचीन काल में लोग मानते थे कि खेलने-कूदने से समय बर्बाद होता है तथा पढ़ने-लिखने से बच्चा नवाब बनता है। परन्तु यह बात कोई भी शिक्षाविद नहीं स्वीकार करता। शिक्षाशास्त्री तो यह मानते हैं कि शारीरिक विकास से मानसिक विकास संभव है। अत: किसी एक की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। दोनों में संतुलन बनाए रखना परम-आवश्यक है। मेरा भी यही सुझाव है कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में संतुलन बनाए रखें जिससे सर्वांगीण विकास हो सके। शिक्षा का लक्ष्य भी यही है कि छात्र का सर्वांगीण विकास हो। इसी में शिक्षा की सार्थकता है।

(ख) **ऊर्जा-बचत : हमारा उत्तरदायित्व**

आज का युग आर्थिक युग है। आर्थिक विकास के लिए यह परम-आवश्यक है कि ऊर्जा का विकास किया जाए। ऊर्जा का विकास जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक है— ऊर्जा की बचत। संसार के समुन्नत राष्ट्र वे ही हैं जो ऊर्जा के क्षेत्र में आत्म निर्भर हैं। उनकी सफलता का आधार है ऊर्जा का विकास और ऊर्जा की बचत। ऊर्जा की बचत से हम कल-कारखाने अधिक समय तक चला सकते हैं। अधिक समय तक मशीनों के चलने से उत्पादन भी अधिक होता है। अधिक उत्पादन से आर्थिक विकास उत्तरोत्तर होता चला जाता है। ऊर्जा की बचत में हम तभी सहायक सिद्ध हो सकते हैं जब हम कम से कम ऊर्जा खर्च करें। जब घर से बाहर कहीं जाएँ तो पंखा, बल्ब, ट्यूब सब बंद करके जाएँ। पंखें को उसी गति से चलाएँ जितने में काम चल जाए। ऊर्जा बर्बाद नहीं करनी चाहिए। इस दिशा में मेरा सुझाव है कि कम ऊर्जा खपत करने वाली आधुनिक सी०एफ०एल० (CFL) ट्यूब का प्रयोग करें तथा अधिक तेज़ रोशनी बेकार जाने से रोकें। ऐसा करके अपनी आँखों की रोशनी भी बचाएँ तथा ऊर्जा बचत करके राष्ट्र का कल्याण करें।

(ग) **कक्षा में अध्यापक की भूमिका**

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि "शिक्षक वह दीपक है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।" एक राष्ट्र निर्माता के रूप में अध्यापक राष्ट्र के भावी-नागरिकों का, उनके जीवन का, उनके आचरण और उनके भविष्य का निर्माण करता है। अध्यापक का कर्त्तव्य कक्षा से ही आरंभ होता है। वह अपने शिक्षण-कार्य के दौरान प्रत्येक छात्र की रुचि, योग्यता, मानसिक क्षमता का ध्यान रखते हुए अध्यापन करता है। कक्षा में अध्यापक की भूमिका मार्ग-दर्शक की होती है। अध्यापक में अपने विषय की पूर्ण योग्यता, ज्ञान और अभिव्यक्ति की क्षमता होनी चाहिए। ज्ञान से अधिक विषय को समझाने की योग्यता होनी चाहिए। उसमें ऐसी क्षमता होनी चाहिए कि हर मानसिक स्तर का छात्र आसानी से ज्ञान ग्रहण कर सके। उच्च स्तर के या निम्न स्तर के छात्र उपेक्षित न रह जाएँ। अध्यापक का सबसे बड़ा कार्य अथवा उत्तरदायित्व है कि छात्रों के साथ समानता का व्यवहार करे। समानता से अध्यापक को सम्मान मिलता है। अत: छात्रों में भेद-भाव या पक्षपात न करके अध्यापक को चाहिए कि व्यवहार में पारदर्शिता लाए। अध्यापक के लिए सभी छात्र समान होते हैं तथा सभी बच्चे

अपने ही बच्चों जैसे होते हैं। अत: समानता का व्यवहार करके छात्रों का विश्वास बनाए रखना चाहिए। व्यवहार की पारदर्शिता तथा आत्मीयता से छात्र अध्यापक के प्रति सम्मान का भाव रखते हैं तथा अपने विकास के प्रति जागरूक रहते हैं।

खण्ड 'ग'

5. (क) 'शब्द' 'पद' कब कहलाता है? 1

(ख) रेखांकित पदबंधों के नाम लिखिए : 2

(*i*) वे हानि-लाभ का हिसाब लगाकर ही क़दम उठाते हैं।

(*ii*) उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी।

(ग) रेखांकित का पद-परिचय दीजिए : 1

बालक केला खा रहा है।

उत्तर—(क) देखें 2007 (Set I) का प्रश्न 5 (*i*). [पृष्ठ 98

(ख) (*i*) क्रिया विशेषण पदबंध

(*i*) संज्ञा पदबंध

(ग) **केला—**जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'खा रहा है' क्रिया का कर्म।

6. (क) रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए : 2

(*i*) सबने उपहार दिए क्योंकि उस दिन मेरा जन्मदिन था।

(*ii*) बच्चे ने शेर को देखा और डर गया।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए : 2

(*i*) आलसी बालक काम पूरा नहीं कर पाता। (मिश्र वाक्य बनाइए)

(*ii*) दादा जी घूमकर आए। रेडियो सुनने लगे। (संयुक्त वाक्य बनाइए)

उत्तर—(क) (*i*) मिश्र वाक्य

(*ii*) संयुक्त वाक्य

(ख) (*i*) जो आलसी बालक है वह काम पूरा नहीं कर पाता।

(*ii*) दादाजी घूमकर आए और रेडियो सुनने लगे।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(*i*) सूर्य + उदय (संधि कीजिए) 1

(*ii*) परमात्मा (संधि-विच्छेद कीजिए) 1

(*iii*) हस्त द्वारा लिखित (समस्त पद बनाइए) 1

(*iv*) प्रतिदिन (समास-विग्रह कीजिए) 1

उत्तर—(*i*) **सूर्य + उदय—**सूर्योदय

(*ii*) **परमात्मा—**परम + आत्मा

(*iii*) **हस्त द्वारा लिखित—**हस्तलिखित

(*iv*) **प्रतिदिन—**दिन-दिन

8. (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) बात गाँठ बाँधना 1

(*ii*) जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाना 1

(ख) निम्नलिखित कथनों के लिए उपयुक्त लोकोक्तियाँ लिखिए : 2

(*i*) सबके मना करने पर भी गंगाराम ने अपना सब कुछ उस धूर्त को सौंप दिया। अब सब कुछ लुट जाने पर रो रहा है। ठीक ही कहा गया है .... खेत।

(*ii*) संजय मुंबई जाकर पूरी तरह से वहाँ के रंग में ही रंग गया है। किसी ने सच ही कहा है .... वेश।

उत्तर—(क) (*i*) **बात गाँठ बाँधना—**मेरी बात को गाँठ बाँध लो बेटे! मुसीबत पड़ने पर कोई तुम्हारे पास नहीं आएगा क्योंकि दुनिया मतलबी है।

(*ii*) **जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाना—**उस चालबाज़ ने मेरे विषय में बुरी बातें कहकर मुझे ऐसा आघात पहुँचाया है कि जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

(ख) (*i*) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

(*ii*) जैसा देश वैसा वेश।

9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : **1+1+1+1=4**

(*i*) एक-दूसरा की सहायता करो।

(*ii*) इस पैन का मूल्य केवल दस रुपए मात्र है।

(*iii*) वहाँ मुफ्त आँखों का आपरेशन हो रहा है1

(*iv*) पिताजी ने हस्ताक्षर कर दिया।

उत्तर—(*i*) एक-दूसरे की सहायता करो।

(*ii*) इस पैन का मूल्य दस रुपए मात्र है।

या, इस पेन का मूल्य केवल दस रुपए है।

(*iii*) वहाँ आँखों का मुफ़्त आपरेशन हो रहा है।

(*iv*) पिता जी ने हस्ताक्षर कर दिए।

खण्ड 'घ'

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो।
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो।
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

(*i*) कवि तथा कविता का नाम लिखिए 1

(*ii*) कविता में 'साथियो' किसे कहा गया है? 1

(*iii*) ''साँस थमती गई नब्ज़ जमती गई'' में किनकी तथा किस दशा का चित्रण किया गया है? 2

(*iv*) 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—(*i*) **कवि**—कैफ़ी आज़मी

कविता—कर चले हम फिदा

(*ii*) कविता में 'साथियो' उन वीर जवानों, सैनिकों को कहा गया है जो अभी जीवित हैं तथा भारतमाता की रक्षा करने में समर्थ हैं।

(*iii*) ''साँस थमती गई नब्ज़ जमती गई'' में चीनी आक्रमण का प्रसंग है। हिमालय की बर्फीली हवाओं में सर्दी के दिनों में जीवन बिताना कठिन था। उन कठिन परिस्थितियों में भारत के वीर सैनिक देश की रक्षा कर रहे थे। उनके सामने दोहरी मार वाली चुनौती थी। एक ओर मौसम की मार तो दूसरी ओर शत्रु सेना की मार थी।

(*iv*) 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' पंक्ति का भाव यह है कि भारतीय वीर सैनिकों ने देश की रक्षा करते हुए आत्म बलिदान दे दिया किन्तु राष्ट्र के आत्म-सम्मान और आत्म गौरव पर आँच नहीं आने दी। सिर झुकाना आत्म-सम्मान खोने का प्रतीक है; न झुकना स्वाभिमान कायम रखने का परिचायक है।

अथवा

''जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल!''

(*i*) कवि एवं कविता का नाम लिखिए। 1

(*ii*) नभ के दीपकों को स्नेहहीन क्यों कहा गया है? 1

(*iii*) कविता में बादलों की क्या विशेषता बताई गई है? 1

(*iv*) दीपक को 'विहँस-विहँस' जलने के लिए क्यों कहा गया है? 2

उत्तर—(*i*) **कवियित्री**—महादेवी वर्मा

कविता—मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

(*ii*) नभ के दीपकों को स्नेहेहीन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन तारे रूपी दीपकों में स्नेह-तेल अथवा प्रेम का अभाव दिखाई देता है। ये जलकर भी स्नेह के प्रभाव से रहित बने रहते हैं। इसी अभाव को दर्शाने के लिए तारे रूपी दीपकों को स्नेहहीन कहा गया है।

(*iii*) कविता में बादलों की विशेषताएँ बताते हुए कहा गया है कि वे अपने भीतर बिजली की चमक लेकर काली घटाओं के रूप में घिर जाते हैं। उनकी लालिमा की आभा सागर के सीने में लगी आग के समान प्रतीत होती है। बिजली की लालिमा सागर के जल में प्रतिबिंबित होती है।

(*iv*) कवयित्री ने जीवनरूपी दीपक को 'विहँस-विहँस' जलने के लिए कहा है क्योंकि जीवन रूपी दीपक ईश्वर के आने के पथ को प्रकाशित करेगा। परमात्मा के दर्शन, मिलन का आनंद प्राप्त हो सकेगा। अंततः जीवन साकार हो उठेगा।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **3+3+3=9**

(*i*) 'सच्चे मन में ही राम बसते हैं।' इस भाव को बिहारी ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

(*ii*) मीराबाई किसकी चाकरी, किस प्रकार करना चाहती हैं और क्यों?

(*iii*) 'मनुष्यता' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि पशु-प्रवृत्ति किसे कहा गया है और मनुष्य किसे माना गया है?

(*iv*) 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(क) देखें सैम्पल पेपर II (2008) का प्रश्न 11(*ii*). [पृष्ठ (*xiv*)

(ख) देखें 2002 (Set II) का प्रश्न 12(*i*). [पृष्ठ 12

(*iii*) 'मनुष्यता' कविता के आधार पर स्वार्थपरता को ही पशु-प्रवृत्ति कहा गया है। पशु की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वह अपना पेट भरना चाहता है। यहाँ तक कि अपने बच्चों के लिए भी त्याग नहीं करता। मानव में यदि ऐसी ही स्वार्थपरता आ जाए तो वह भी पशु बन जाएगा। जन्म से न सही, कर्म से पशुता का यही लक्षण है।

कविता के अनुसार मनुष्य उसे माना गया है जो परोपकार का जीवन बिताता हो, खुद भूखे रहकर दूसरों का पेट भरता हो।

जो मनुष्य-मात्र को बंधु समझता हो, मनुष्य-मात्र के लिए जीता और मरता हो।

(*iv*) देखें सैम्पल पेपर I (2008) का प्रश्न 12 (ख). [पृष्ठ (*vi*)

12. (क) 'तोप' कविता का प्रतिपाद्य संक्षेप में लिखिए। 3

(ख) 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोय।' कबीर के इस काव्यांश की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए। 2

उत्तर—(क) देखें सैम्पल पेपर I (2009) का प्रश्न 12(क). [पृष्ठ (*xi*)

(ख) संत कवि कबीर ने इस दोहे के माध्यम से प्रेम के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। प्रेम जगत में सार तत्त्व है। यही मानवता का मार्ग प्रशस्त करने वाला है। प्रेम ही परमात्मा है। अत: पोथी पढ़कर भी जो मानवता से प्रेम नहीं करता, जाति, संप्रदाय, ऊँच-नीच का भेद-भाव करता है वह मूढ़ है, अज्ञानी है। प्रेम को जानने वाला तथा इसके रहस्य को जानने वाला ही पंडित एवं ज्ञानी बन सकता है। प्रेम ही ईश्वर का दूसरा रूप है।

13. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी का सोना अलग। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है, इसलिए वह ज़्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मज़बूत भी होता है। औरतें अकसर इसी सोने के गहने बनवा लेती हैं। फिर भी होता तो वह है गिन्नी का ही सोना। शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हम लोग उन्हें ''प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट'' कहकर उनका बखान करते हैं। पर बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है।

(*i*) पाठ और लेखक का नाम लिखिए। 1

(*ii*) शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है? 2

(*iii*) गिन्नी के सोने में ताँबा मिलाने से क्या लाभ होते हैं? 1

(*iv*) शुद्ध सोना एवं ताँबा किसके प्रतीक होते हैं? 1

(*v*) ''प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट'' किसे कहा गया है? 1

उत्तर—(क) (*i*) **पाठ**—पतझड़ में टूटी पत्तियाँ—'गिन्नी का सोना'।

लेखक—रवीन्द्र केलेकर।

(*ii*) देखें 2003 (Set III) का प्रश्न 13(ख)(*i*). [पृष्ठ 38

(*iii*) गिन्नी के सोने में ताँबा मिलाने से वह अधिक चमकने लगता है। वह शुद्ध सोने की अपेक्षा अधिक मज़बूत हो जाता है तथा गहने बनवाने योग्य हो जाता है।

(*iv*) शुद्ध सोना आदर्शवादी व्यक्ति का प्रतीक है। ताँबा व्यावहारिक आदर्श का प्रतीक है जिसे प्रायोगिक जीवन में देखकर अपनाया जाता है। शुद्ध सोने का प्रतीक पूर्ण आदर्श है, उसमें व्यावहारिकता का मिश्रण नहीं होता, वह सिद्धांत-वादी होता है।

(*v*) देखें 2007 (Set III) का प्रश्न 13(ख)(*ii*). [पृष्ठ 38

अथवा

''वामीरो घर पहुँचकर भीतर ही भीतर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके भीतर तताँरा से मुक्त होने की एक झूठी छटपटाहट थी। एक झल्लाहट में उसने दरवाज़ा बंद किया और मन को किसी और दिशा में ले जाने का प्रयास किया। बार-बार तताँरा का याचना भरा चेहरा उसकी आँखों में तैर जाता। उसने तताँरा के बारे में कई कहानियाँ सुन रखी थीं। उसकी कल्पना में तताँरा एक अद्‌भुत, साहसी युवक था। किन्तु वही तताँरा उसके सम्मुख एक अलग रूप में आया। सुंदर, बलिष्ठ किन्तु बेहद शांत, सभ्य और भोला। उसका व्यक्तित्व कदाचित् वैसा ही था जैसा वह अपने जीवन-साथी के बारे में सोचती रही थी। किन्तु एक दूसरे गाँव के युवक के साथ यह सम्बन्ध परम्परा के विरुद्ध था।''

(*i*) पाठ और लेखक का नाम लिखिए। 1

(*ii*) वामीरो तताँरा के विषय में किस विचार से मुक्त होना चाहती थी? उसकी मुक्त होने की छटपटाहट को झूठी क्यों कहा गया है? 2

(*iii*) तताँरा के याचना भरे चेहरे में कौन-से भाव छिपे हुए थे? 1

(*iv*) वामीरो कैसे जीवन-साथी की कल्पना करती थी? उसकी यह कल्पना साकार क्यों नहीं हो पा रही थी? 2

उत्तर—(*i*) **पाठ**—वामीरो कथा

लेखक—लीलाधर मंडलोई

(*ii*) वामीरो तताँरा के इस विचार से मुक्त होना चाहती थी कि वह उसके याचना के स्वर को पूरा न कर सकी, उसे भूल जाए। इसके द्वारा वह उसके प्रति अपनी आसक्ति को भी छोड़ना चाहती थी। वामीरो की मुक्त होने की छटपटाहट को झूठी इसलिए कहा गया है क्योंकि वह चाहकर भी तताँरा को भूल नहीं पा रही थी। वह भीतर ही भीतर उसके गुणों से आसक्त होकर उससे प्रेम करने लगी थी।

(*iii*) तताँरा के याचना भरे चेहरे में उसके जीवन-साथी का भाव दिखाई दे रहा था क्योंकि वामीरो की दृष्टि में तताँरा एक सुन्दर, बलिष्ठ, शांत, सभ्य और भोला युवक था। ऐसे ही व्यक्तित्व का जीवन-साथी अपने लिए वामीरो चाहती थी।

(*iv*) वामीरो अपने लिए ऐसे जीवन-साथी की कल्पना करती थी जो देखने में सुंदर हो, बलिष्ठ हो, शांत स्वभाव का हो, आचरण से सभ्य हो तथा स्वभाव से सरल हो। तताँरा में ये सभी गुण निहित थे।

वामीरो की यह कल्पना साकार इसलिए नहीं हो पा रही थी क्योंकि वह तताँरा से शादी नहीं कर सकती थी। निकोबार द्वीप समूह में यह परंपरा थी कि उसी गाँव का लड़का वहाँ की लड़की से शादी कर सकता है।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3+3+3=9

(*i*) बड़े भाई साहब की स्वभावगत किन्हीं **दो** विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

(*ii*) 'गिन्नी का सोना' प्रसंग के संदर्भ में, उदाहरण देते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए कि गाँधी जी में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी।

(*iii*) 'कारतूस' पाठ में लेफ़्टीनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के खिलाफ सारे हिन्दुस्तान में एक लहर दौड़ गई थी? स्पष्ट कीजिए।

(*iv*) सुभाष बाबू ने कब और क्यों जुलूस निकाला? लेखक ने इस दिन को अपूर्व क्यों कहा?

उत्तर—(*i*) 1. बड़े भाई साहब अध्ययनशील थे। इसलिए वे खेलकूद छोड़कर दिन-रात पढ़ते रहते थे।

2. वे छोटे भाई के विकास के लिए तत्पर रहते थे। यही कारण है कि वे उसे खेलना बंद करके पढ़ते रहने की नसीहत देते थे।

(*ii*) 'गिन्नी का सोना' प्रसंग के आधार पर शुद्ध सोना आदर्श का प्रतीक है। गिन्नी का सोना ताँबा मिला होने के कारण व्यावहारिक आदर्श बन जाता है। गांधी जी शुद्ध सोना के समान शुद्ध आदर्शवादी थे। वे किसी से अपने आदर्श के विरुद्ध समझौता नहीं करते थे। यह गुण एक आदर्श एवं सफल नेता के गुणों में से एक है। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि गांधीजी में नेतृत्त्व की अद्‌भुत क्षमता थी।

(*iii*) 'कारतूस' पाठ में लेफ्टीनेंट को ऐसा लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहर दौड़ गई है क्योंकि वज़ीर अली को पकड़ने के लिए अंग्रेज़ी सैनिक जंगल में डेरा डाले बहुत दिनों से प्रयास कर रहे थे किन्तु पकड़ नहीं पाए। उन्हें ऐसा लगा कि हिन्दुस्तानियों ने ऐसे विद्रोहियों को छिपा रखा है।

(*iv*) सुभाष बाबू ने 26 जनवरी सन् 1931 को जुलूस निकाला क्योंकि वह स्वतंत्रता प्राप्ति की दूसरी वर्षगाँठ मना रहे थे। यह दिन कोलकाता वासियों के लिए खुशी का दिन था। इस दिन को अपूर्व दिन इसलिए कहा गया है कि सारे देश ने इस दिन को स्वतंत्रता दिवस मानकर उत्सव मनाया था।

15. (क) आपके विचार में 'गिरगिट' पाठ का शीर्षक किस प्रकार उपयुक्त है? इसमें किस प्रकार की शासन-व्यवस्था का उल्लेख किया गया है? 3

(ख) 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक की माँ कब पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी। इससे उनके स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है? 2

उत्तर—(क) 'गिरगिट' पाठ का शीर्षक उचित एवं सटीक है क्योंकि गिरगिट रंग बदलने के लिए प्रसिद्ध है। विचार बदलने वाले व्यक्तियों को भी कहा जाता है कि आप तो गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते हैं। इस पाठ में पुलिस इंसपेक्टर उच्च अधिकारी की चापलूसी करता है। वह बार-बार अपने वक्तव्य बदलता है।

इसमें भाई-भतीजावाद से लेकर चापलूसी करने, स्वार्थ सिद्‌ध करने, दोषी को सजा न दिलाने तथा निर्दोष को दण्डित करने जैसी दोषपूर्ण शासन-प्रणाली का उल्लेख किया गया है।

(ख) लेखक की माँ सूर्यास्त होने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं, क्योंकि उनका मानना था कि रात में पेड़-पौधे भी सोते हैं। रात में या सूर्यास्त के बाद पत्ते तोड़ने पर पेड़-पौधे रोते हैं। अत: उन्हें तकलीफ नहीं देनी चाहिए।

इससे लेखक की माँ की संवेदनशीलता, करुणा तथा दया की भावना आदि स्वभावगत विशेषताओं का पता चलता है।

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 2+2+2=6

(क) हरिहर काका महंत की चिकनी-चुपड़ी बातों के भीतर की कौन-सी सच्चाई किस प्रकार जान गए थे?

(ख) 'सपनों के-से दिन' पाठ में स्कूल के बच्चों के प्रति हेड मास्टर शर्मा जी के व्यवहार की **तीन** विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—(क) हरिहर काका महंत की चिकनी-चुपड़ी बातों में छिपी इस सच्चाई को जान गए कि वह काका की ज़मीन हड़पना चाहते हैं क्योंकि इतने प्रेम से तथा इतना सत्कार करते हुए वे काका से पहले कभी नहीं मिले थे। उन्हें यह भी पता था कि काका के अपने भाइयों से संबन्ध अच्छे नहीं चल रहे हैं अत: वह अवसर का लाभ उठाना चाहते थे। काका उन्हें, उनकी बातों से पहचान गए।

(ख) 1. हेड मास्टर शर्मा जी कोमल स्वभाव के व्यक्ति थे।
2. बच्चों को प्रोत्साहित करके पढ़ाते थे।
3. वे बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता थे।
4. वे शारीरिक दण्ड देना नहीं चाहते थे।

17. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+2=6

(*i*) अम्मी शब्द पर टोपी के घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

(*ii*) गाँव में नेताजी हरिहर काका से मिलने क्यों गए थे? नेताजी की असलियत क्या थी?

(*iii*) स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?

(*iv*) अंग्रेज़ी-साहित्य के मास्टर जी के किस व्यवहार से टोपी ने कक्षा में अपने को अपमानित महसूस किया?

उत्तर—(*i*) देखें 2002 (Set I) का प्रश्न 17(*iii*). [पृष्ठ 8

(*ii*) गाँव में नेता जी हरिहर काका से इसलिए मिलने गए थे कि वे स्कूल खोलने के नाम पर काका से उनकी ज़मीन ले लेंगे तथा उनका नाम अमर होने का आश्वासन एवं भरोसा दिलाकर ज़मीन हड़प लेंगे।

नेताजी की असलियत यह थी कि वे गाँव के विकास की बात कहकर धोखा देते थे। वे कुछ करते-धरते नहीं थे। केवल मौज करते और राजनीति का ज़ादू लोगों पर चलाते रहते थे।

(*iii*) देखें सैम्पल पेपर II (2008) का प्रश्न 17 (*ii*). [पृष्ठ (*xvi*)

(*iv*) टोपी शुक्ला फेल हो गया था। मास्टर जी बार-बार यह बात कहते थे कि पिछली कक्षा में चले जाओ। उन्हीं बच्चों के साथ अगले वर्ष आ जाना। इसके अतिरिक्त अन्य बच्चों को टोपी का उदाहरण देकर कहते थे कि तुम भी टोपी की तरह फेल होना चाहते हो। मास्टर जी के ऐसे व्यवहार से टोपी स्वयं को अपमानित महसूस करता था।

Hindi (Course B)—2009
Comptt.
(Set II—Outside Delhi)

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. छात्रों के लिए विद्यालय में केंटीन की सुविधा उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

सेवा में
श्रीमान् प्रधानाचार्य जी
राजकीय वरि० मा० विद्यालय
नज़फगढ़ दिल्ली

विषय—कैंटीन की सुविधा के संबन्ध में पत्र

मान्यवर

सविनय निवेदन है कि विद्यालय में अभी तक कैंटीन की सुविधा प्राप्त नहीं है। इस अभाव के कारण हम छात्रों को रिसेस (मध्यावकाश) के समय पर स्वल्पाहार की सुविधा नहीं प्राप्त होती। भूख-प्यास का लगना स्वाभाविक है। विद्यालय से बाहर जाने की अनुमति नहीं होती। भूख लगने पर जब खाने के लिए कुछ भी उपलब्ध नहीं होता तो मध्यावकाश के पश्चात् पढ़ाई में भी मन एकाग्र नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्त स्कूल में हमारे उपयोग की लेखन-सामग्री, स्टेशनरी आदि भी नहीं मिलती।

अत: आपसे अनुरोध है कि विद्यालय में कैंटीन की सुविधा प्रदान करने का प्रबन्ध करें।

सधन्यवाद
अतुल
रोल न.—35
कक्षा—बारहवीं ए
दिनांक ....

अथवा

अपनी पसंद के किसी कार्यक्रम के प्रसारण के समय में परिवर्तन का अनुरोध करते हुए दूरदर्शन अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में
निदेशक
दूरदर्शन कार्यक्रम
डी० डी०-1
दिल्ली

विषय—संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम-समय-परिवर्तन हेतु पत्र

महोदय

मैं संगीत का नियमित श्रोता हूँ। दूरदर्शन की प्रस्तुति में जब संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम आता है तो रात में बहुत देर हो जाती है। अपने स्कूल से मिला गृहकार्य करने में ही इतना समय लग जाता है कि देर रात तक जागने में कठिनाई महसूस होती है। यदि इस कार्यक्रम का समय बदलकर रात 9.00 बजे कर दिया जाए तो अच्छा होगा। इससे अपनी पढ़ाई के साथ-साथ संगीत-श्रवण का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा।

अतः आपसे अनुरोध है कि संगीत-कार्यक्रम का समय-परिवर्तन करके हमें अनुग्रहीत करें।

सधन्यवाद
रमेश
71, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली
दिनांक—5 अक्तूबर 2009

खण्ड 'ग'

5. (क) तथा (ख)—देखें प्रश्न 5 (क) तथा (ख), Set I.

(ग) रेखांकित का पद-परिचय दीजिए : 1

दीदी <u>माला</u> बना रही है।

उत्तर—(ग) माला— जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक,
'बना रही है' क्रिया का कर्म।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(*i*) देव + आलय (संधि कीजिए) 1

(*ii*) स्वाधीन (संधि-विच्छेद कीजिए) 1

(*iii*) भय से आकुल (समस्त पद बनाइए) 1

(*iv*) रात-दिन (समास-विग्रह कीजिए) 1

उत्तर—(*i*) **देव + आलय**—देवालय

(*ii*) **स्व + आधीन**—स्वाधीन

(*iii*) **भय से आकुल**—भयाकुल

(*ii*) **रात-दिन**—रात और दिन।

8. (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) आग बबूला होना 1

(*ii*) चेहरा मुरझाना 1

(ख) देखें प्रश्न 8(ख), Set I.

उत्तर—(क) (*i*) **आग बबूला होना—**कक्षा में शोर मचाने के कारण अध्यापक महोदय आग बबूला हो गए।

(*ii*) **चेहरा मुरझाना**—रमेश अपने ही घर में जब चोरी करते पकड़ा गया तो उसका चेहरा मुरझा गया।

9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : 1+1+1+1=4

(*i*) मैं मेरा काम कर रहा हूँ।

(*ii*) सब सकुशल पूर्वक घर पहुँच गए।

(*iii*) भाई को बनाकर पतंग दो।

(*iv*) क्या तुमने हस्ताक्षर किया?

उत्तर—(*i*) मैं अपना काम कर रहा हूँ।

(*ii*) सभी सकुशल घर पहुँच गए।

या, सभी कुशलतापूर्वक घर पहुँच गए।

(*iii*) पतंग बनाकर भाई को दो।

(*iv*) क्या तुमने हस्ताक्षर किए?

खण्ड 'घ'

12. (क) 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। 3

(ख) कबीर का अपने को 'दुखिया' और संसार को 'सुखिया' कहने का क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—(क) प्रकृति प्रेमी **कविवर पंत** ने पर्वत प्रदेश में वर्षा-ऋतु का मनोहारी प्रकृति-चित्रण किया है। वर्षा का जल नीचे एकत्र होकर तालाब सा भर उठता है तथा ऊपर धुआँ उठता है। स्थान-स्थान पर बहते झरने मनमोहक लगते हैं। वे पर्वत का गुणगान करते रहते हैं। बादल बरसते हैं, गरजते हैं तथा बिजली चमकती रहती है। पेड़ों की हरियाली, वर्षा से नहाए पेड़ पौधे अति-स्वच्छ एवं आकर्षक लगते हैं। पानी की अधिकता से लगता है मानो आकाश टूटकर गिर गया हो। जलमय सृष्टि देखने को मिलती है।

(ख) संत कबीर ज्ञान मूर्ति कवि थे। उन्होंने संसार पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि लोग खाने और सोने को सुख का साधन

मानते हैं। उनकी इसी अज्ञानता से कबीरदास दुखी हो जाते हैं। वे चिंतनशील रहकर मानवीय दुर्बलताओं को देखकर दुखी होते हैं।

15. (क) यह जानने के बाद कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है—ओचुमिलोव के विचारों में क्या परिवर्तन आया और क्यों? 3

(ख) महाकवि शेख़ अयाज़ ने अपनी बाँह पर चींटे को देखकर क्या किया? उनके कार्य से उनके स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है? 2

उत्तर—(क) देखें सैम्पल पेपर I (2009) का प्रश्न 14(घ). [पृष्ठ *(xii)*

(ख) महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी बाँह पर चींटे को देखकर उसी समय भोजन करना छोड़ दिया और चींटे को उसके घर छोड़ने के लिए चल पड़े। ऐसा उन्होंने अपने दयालु स्वाभाव के कारण किया था। क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि चींटा बेघर हो जाए।

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : 4

(क) कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या सम्बन्ध है? इसके क्या कारण हैं?

(ख) 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक को स्कूल की पढ़ाई में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था और हेडमास्टर शर्मा जी उसकी किस प्रकार सहायता करते थे?

उत्तर—(क) देखें 2008 (Comptt. I Delhi) का प्रश्न 16(क) [पृष्ठ 142

(ख) लेखक को स्कूल की पढ़ाई के समय गरीबी **पहली कठिनाई** लगती थी क्योंकि वह किताबें नहीं खरीद पाता था। हेडमास्टर शर्माजी पुरानी पुस्तकें लाकर देते थे तब लेखक पढ़ सका। **दूसरी कठिनाई** अगली कक्षा के कठिन विषयों की लगती थी। **तीसरी कठिनाई** यह थी कि नए अध्यापकों द्वारा पिटाई का भय बना रहता था। इस प्रकार शर्मा जी के व्यवहार से कठिनाइयों पर लेखक को विजय मिली और वह पढ़-लिख गया।

Hindi (Course B)—2009
Comptt.
(Set III—Outside Delhi)

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त शेष सभी प्रश्न Set I तथा Set II में पूछे गए हैं।

खण्ड 'ख'

3. विद्यालय के परिसर में 'इंजीनियरिंग' की प्रवेश परीक्षा की कोचिंग कक्षाओं की व्यवस्था कराने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 5

उत्तर—

सेवा में

श्रीमान् प्रधानाचार्य जी

राजकीय वरि० मा० विद्यालय

नरेला, दिल्ली

विषय—इंजीनियरिंगग की प्रवेश परीक्षा हेतु कोचिंग के संबंध में

महोदय

मैं आपके विद्यालय में बारहवीं A का छात्र हूँ। मेरे जैसे अनेक छात्र बारहवीं के बाद इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा में बैठना चाहते हैं। इसकी तैयारी के लिए हमें विशिष्ट कोचिंग लेने के लिए प्रतिदिन आने जाने में 20 किलोमीटर चलना होगा जिसमें समय तथा धन दोनों का नुकसान होगा। क्या यह उचित नहीं होगा कि स्कूल में ही कोचिंग की व्यवस्था हो?

आपसे प्रार्थना है कि कोचिंग की व्यवस्था कराकर हम छात्रों की सहायता करें।

सधन्यवाद

प्रार्थी

अविनाश

बारहवीं ए

दिनांक ....

अथवा

खराब सेल फोन के सेट की शिकायत करते हुए संबद्ध कंपनी के स्थानीय अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में

वितरण अधिकारी

रिलायन्स सेल फोन

शाहदरा, दिल्ली

विषय—खराब सेल फोन सेट के संबंध में

महोदय

निवेदन है कि आपके विक्रय केन्द्र से मैंने पिछले सप्ताह एक सेल फोन क्रय किया था। सेल फोन का प्रयोग करने के लिए मैंने उसे चार्ज किया। फोन मिलाने पर ज्ञात हुआ कि वह बीच-बीच में बंद हो जाता है। यही नहीं, कभी-कभी दोहरी और काँपती हुई आवाज़ भी आने लगती है।

आशा करता हूँ कि आप यह सेट बदलकर मुझे दूसरा अच्छा सेट देने की कृपा करेंगे ताकि मैं सेल फोन का प्रयोग कर सकूँ। कष्ट के लिए क्षमा।

भवदीय

राजेश

525, अरावली

नोएडा

दिनाक ....

खण्ड 'ग'

5. (क) तथा (ख)—देखें प्रश्न 5 (क) तथा (ख), Set I.

(ग) रेखांकित का पद परिचय दीजिए :

वह नल से <u>पानी</u> पी रहा है। **1**

उत्तर—(ग) **पानी—** जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग,
एकवचन, कर्मकारक,
'पी रहा है' क्रिया का कर्म।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(*i*) देव + आलय (संधि कीजिए) **1**

(*ii*) धर्मात्मा (संधि-विच्छेद कीजिए) **1**

(*iii*) शक्ति से हीन (समस्त पद बनाइए) **1**

(*iv*) सेनापति (समास-विग्रह कीजिए) **1**

उत्तर—(*i*) **देव + आलय**—देवालय

(*ii*) **धर्मात्मा**—धर्म + आत्मा

(*iii*) **शक्ति से हीन**—शक्तिहीन

(*iv*) **सेनापति**—सेना का पति / स्वामी

8. (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) आवाज़ उठाना **1**

(*ii*) प्राण निकलना **1**

(ख) देखें प्रश्न 8(ख), Set I.

उत्तर—(क) (*i*) **आवाज़ उठाना**—जब मालिक द्वारा मज़दूरों का शोषण बढ़ते-बढ़ते असह्य हो उठा तो मज़दूरों ने मालिक के विरुद्ध आवाज़ उठायी।

(*ii*) **प्राण निकलना**—रात को जंगल में जा रहे थे कि उसी समय शेर की दहाड़ सुनाई दी। उसी समय टार्च भी बन्द हो गयी। अंधेरे में भय के मारे मानो **प्राण निकल गए**।

9. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए : **1+1+1+1=4**

(*i*) तुम्हारे लिए पत्र कौन ने भेजा है।

(*ii*) सधन्यवाद सहित यह भेंट भेज रही हूँ।

(*iii*) मैं ताज़े बाज़ार से फल लाया हूँ।

(*iv*) माँ और पिताजी बाज़ार गई हैं।

उत्तर—(*i*) तुम्हारे लिए किसने पत्र भेजा है?

(*ii*) यह भेंट सधन्यवाद भेज रही हूँ।

या, यह भेंट धन्यवाद सहित भेज रही हूँ।

(*iii*) मैं बाज़ार से ताज़े फल लाया हूँ।

(*iv*) माँ और पिता बाज़ार गए हैं।

खण्ड 'घ'

12. (क) 'मनुष्यता' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। **3**

(ख) गोपियाँ श्री कृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं? बिहारी के दोहे के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। **2**

उत्तर—(क) देखें 2006 (Set II) का प्रश्न 12(ख). [पृष्ठ 86

(ख) देखें 2002 (Set I) का प्रश्न 11 (*ii*). [पृष्ठ 6

16. निम्नलिखित में से किसी *एक* प्रश्न का उत्तर लिखिए : **4**

(क) हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे? कारण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर उन कारणों का उल्लेख कीजिए जिनके कारण गाँव के अनेक बच्चे स्कूल नहीं जाते थे और जो जाते थे उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था।

उत्तर—(क) देखें 2002 (Set I) का प्रश्न 17(*i*). [पृष्ठ 8

(ख) गाँव में लोग अपने बच्चों को प्रायः खेती के कामों में तथा दुकान के कामों में लगा देना चाहते थे। वे जानते थे कि यदि बच्चा अपना ही काम सँभाल ले तो पढ़ाई-लिखाई की जरूरत नहीं है।

जो बच्चे स्कूल जाते थे उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था क्योंकि वे खेल, तालाब में नहाने, हरियाली में घूमने से वंचित रह जाते थे। साथ ही वह अध्यापक तथा पी॰ टी॰ सर की पिटाई से डर कर पढ़ना नहीं चाहते थे।